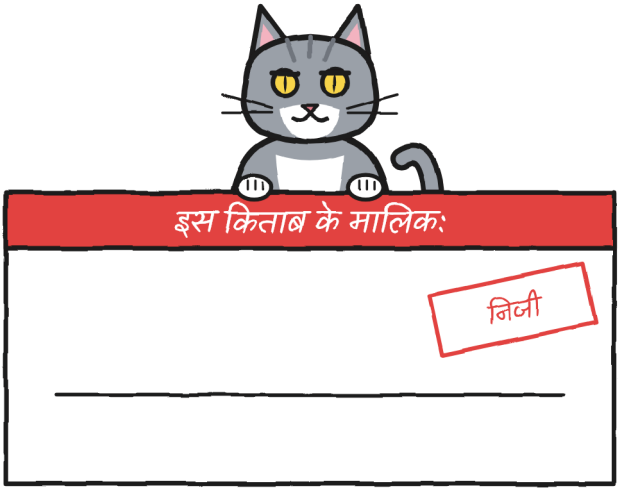

और किसी और की नहीं। –ज.

अगर यह तुम्हें मिल जाए, तो बादल गरजने से पहले मत खोलना।

सिर्फ़ कहानी में

यह मुहर उसे चिह्नित करती है जो सिर्फ़ कहानी में होता है: तुम इसे मत करना। अगर वह कई पन्नों तक चले, तो "यहाँ से" और "यहाँ तक" लिखा होता है। असली तूफ़ान हो, तो आख़िरी पेज देखो। –ज.

नामुमकिन डिलीवरी · 2

बादल गरजने से पहले न खोलें

Lui Eriksson

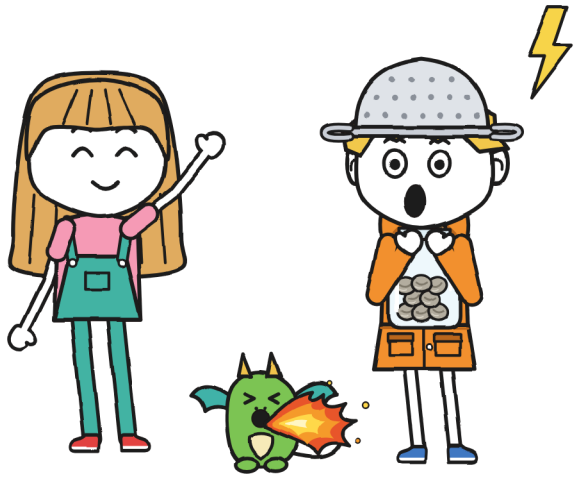

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

नामुमकिन डिलीवरी · 2
बादल गरजने से पहले न खोलें

सीरीज़ की दूसरी किताब। पहली: “यह पार्सल काटता है”।

लेखन और चित्र: Lui Eriksson

हिन्दी संस्करण: LinguAula

साइज़ XL · सचित्र उपन्यास · 13+

पहला संस्करण: 2026

© 2026 Lui Eriksson · info@linguaula.com

कक्षा और घर के लिए खुलकर फ़ोटोकॉपी कर सकते हैं।

फ़ॉन्ट: Andika, Patrick Hand, Caveat, Courier Prime, Kalam, Dekko और Hind (SIL OFL लाइसेंस)।

हर अध्याय का अभ्यास
linguaula.com *पर करो*

इस किताब को लिखने के दौरान किसी भी गरज को चोट नहीं पहुँची।
—ज.

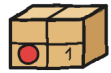

अध्याय 1

तूफ़ान का शिकारी

सामने वाली दुकान में एक पार्सल काँप रहा है।

पिछले शनिवार वह सिर्फ़ एक बार हिला था। तब से रुका नहीं है: एक बारीक, लगातार थरथराहट, जैसे जानवरों के डॉक्टर के इंतज़ार-कमरे में बैठा कोई छोटा-सा कुत्ता काँपता है। सात दिन हो गए। हर दिन थोड़ा और ज़्यादा।

और मेरे पास नई डायरी है।

डायरी नंबर 1 मेरी भर गई। नामुमकिन डिलीवरी की मालकिन मारा ने मुझे यह दूसरी दी: नीला कवर, और एक कोने में दुकान की लाल मुहर। पहले पन्ने पर मैंने शीर्षक लिखा, एक नए शब्द के साथ:

डिलीवरी डायरी 2 · गुनी की। ऑफ़िशियल।

"ऑफ़िशियल" का मतलब है कि इसे पहले मैं पढ़ूँगी। ऑफ़िशियली। —ज.

मारा कहती हैं कि ऑफ़िशियल डायरियों में चित्र नहीं बनाए जाते। देखते हैं: इसमें तो अभी से एक चित्र है।

पिछली डायरी के बारे में जो जानना ज़रूरी है: दो शनिवार पहले जूलिता (हरे नोटों वाली) और मैंने रात को, एक पैदल पुल से, बिना किसी बड़े के, एक ऐसा अंडा पहुँचाया था जिसे बरसों से कोई नहीं पहुँचा पाया था। अब वह चूरा है, ड्रैगन की एक बच्ची, जो मेरी

हर बात की नक़ल उतारती है। दुकान की जादूगरनी मारा ने हमें सज़ा दी: हर शनिवार वहाँ, दस बजे। मैं मोहल्ले में नया हूँ, और मेरा लगभग सारा सामान अब भी डिब्बों में है।

जो काँप रहा है, वह नं. 2 है। वह वापस आए पार्सलों की शेल्फ़ पर रखा है, और उस पर एक लेबल लगा है जो मुझे ज़बानी याद है: इस हफ़्ते हर शाम मैंने उसे पढ़ा है, खड़े-खड़े और बिना छुए, जबकि मारा ऐसा दिखाती रहीं जैसे उन्होंने मुझे देखा ही नहीं।

- नं. 2 · नाज़ुक।
- गंतव्य: फ़्लोरा, नहर वाली सड़क, 9।
- निर्देश: बादल गरजने से पहले न खोलें।
- प्रेषक: R.

चारों ओर “वापस आया” की तेईस मुहरें। मैंने उन्हें दो बार गिना, कि कहीं कोई गिर न गया हो।

वापस आया पार्सल वह होता है जिसे कोई पहुँचा नहीं पाया: अगर पाने वाला उस पर कभी न मिटने वाली स्याही से दस्तख़त न करे, तो सुबह होते ही वह उड़कर अपनी शेल्फ़ पर लौट आता है, क़तार में, बत्तखों की तरह। उन्नीस बाक़ी हैं: यह दीवार पर लिखा है, हरे रंग में, जूलिता की लिखावट में, और जूलिता जो हरे रंग से लिखती है वह मिटता नहीं। उन सबको एक ही व्यक्ति ने भेजा है: R., जिसके बारे में बस इतना पता है कि उसकी लिखावट बहुत ख़राब है।

हर शाम मैं लिखता था कि वह कितना काँपा और मौसम कैसा था: इसी से बना “नं. 2 का थरथर-मीटर”। शुक्रवार को बादल अपने अंदर बिजली लिए हुए था।

यह डर से नहीं काँप रहा: तूफ़ान आने वाला है, शनिवार को, शाम छह बजे। मौसम की ख़बर में छह बार देखा है। —ज.

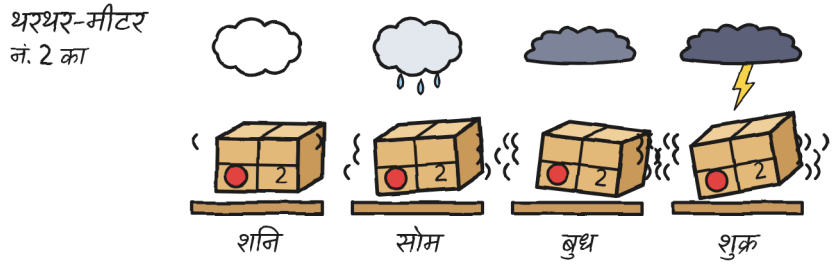

मैंने नोट दो बार पढ़ा। दूसरी बार सिर्फ़ छह वाला हिस्सा।



शनिवार को, दस बजे, मारा (बैंगनी टोपी, और चिंगारियाँ छोड़ने वाली मुहर, जिससे बुझी मोमबत्ती की महक आती है) काउंटर के पीछे नं. 2 को हाथों में लिए हमारा इंतज़ार कर रही थीं। शेल्फ़ पर नहीं: हाथों में। मुहर के पास रबर का मेंढक पड़ा था, जो उस दिन से मेरा है जब से वह किसी का नहीं रहा। और टोन्यो, "बिजली" का डिलीवरी बॉय, हेलमेट पहने खड़ा था: शनिवार उसकी भी सज़ा के दिन हैं, और टोन्यो सज़ा वैसे ही निभाता है जैसे डिलीवरी करता है, वक़्त पर और बिना कुछ उतारे।

"तेईस बार मैं इसे ख़ुद लेकर गई हूँ," मारा ने कहा। "और एक बार भी तूफ़ान में नहीं।"

मारा ने अँगूठे से लेबल को सहलाया। मैंने दुकान की खिड़की की ओर देखा, जो और स्लेटी होती जा रही थी: आज का सफ़र पहले जैसा नहीं होने वाला था।

"यह वाला," मारा ने ऐलान किया, "तुम लोग पहुँचाओगे। आज शाम को।"

जूलिता इतनी ऊँची उछली कि "बाक़ी 19" वाले बोर्ड को लगभग छू ही लिया, और ज़मीन पर आते-आते बोलना शुरू कर चुकी थी। मैं नहीं उछला: मैं दो शब्दों पर अटका रह गया, "आज शाम", और एक वक़्त पर, छह बजे, जो मुझे पार्सल से ज़्यादा भारी लग रहे थे।



मारा ने तीन शर्तें रखीं, और उन्हें उँगलियों पर गिनाया:

1. तुम लोग पाँच बजे निकलोगे, तूफ़ान आने से पहले, और जब तक वह गुज़र न जाए, फ़्लोरा के घर पर रहोगे।
2. तुम्हारे घर वालों को पता है, और फ़्लोरा को भी।
3. नियम वही है जो लेबल पर लिखा है: बादल गरजने से पहले नहीं खोलना। और गरज ठीक सिर के ऊपर वाली होनी चाहिए: दूर वाली गरज नहीं चलेगी।

मैं यह तरकीब पहचान गया: ये लगभग वही नियम थे जो वेरा ने डाँटते हुए बताए थे, चूरा की देखभाल करने वाली वेरा ने, बस डाँट के बाद की जगह पहले कह दिए गए थे। मारा डाँट के वक़्त वहाँ नहीं थीं, फिर भी उन्हें पता चल गया: इस मोहल्ले में डाँटें पार्सलों से पहले पहुँच जाती हैं।

“और आप नहीं आ रहीं?” जूलिता ने पूछा।

“मुझे यहाँ कुछ काम हैं,” मारा ने कहा, और दुकान की खिड़की से बाहर आसमान को देखा, जो स्लेटी होता जा रहा था।

काउंटर के आख़िरी सिरे पर एक तह किया हुआ कंबल रखा था, स्कीइंग वाले ईयरमफ़ और एक पतीला। मैंने सब देखा। फिर मैं पार्सल को देखता रह गया।

तभी जूलिता ने मेरी तरफ़ देखा।

“तुम्हें तूफ़ान पसंद हैं?”

उसने सीधे मेरी आँखों में देखकर पूछा। मैं सच कह सकता था। मैंने यह कहा:

“बहुत पसंद हैं। अपने पुराने मोहल्ले में मैं प्रोफेशनल तूफ़ान का शिकारी था।”

पिछली डायरी में एक झूठ को लौटने में एक दिन और एक रात लगी थी। इस बार मैंने उसका रास्ता छोटा कर दिया: उसी सुबह झूठ का चित्र बनाया और, बगल वाले खाने में, सच का।



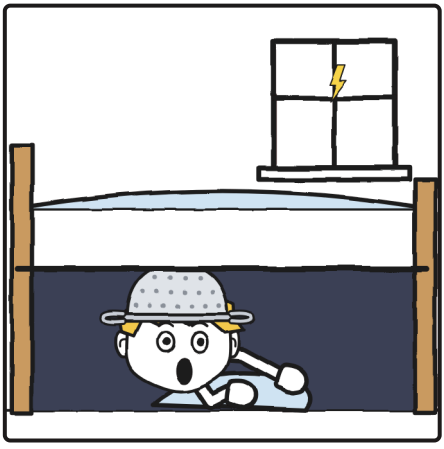

छलनी रसोई वाली थी, स्टील की, दो हत्थों वाली। वह बिजली को नहीं रोकती थी। मेरी मदद इस बात से होती थी कि सिर पर कुछ रखा हो। अब वह शिफ़्टिंग वाले किसी डिब्बे में कहीं पड़ी थी, उन कैंचियों के पास जिन्हें मेरी मम्मी एक हफ़्ते से ढूँढ रही थीं।

जूलिता ने मुझे तूफ़ान गिनना सिखाया: मेरी डायरी में, बिना पूछे और हरे रंग से।

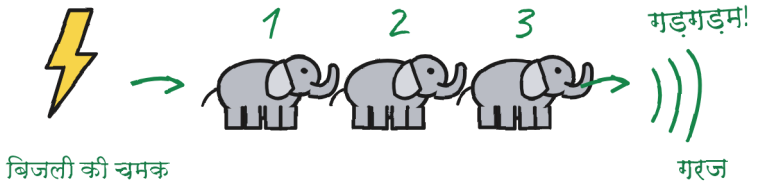

एक हाथी, दो हाथी, तीन हाथी...

1 हाथी = 1 सेकंड

3 हाथी = 1 किलोमीटर (लगभग)

0 हाथी = ठीक ऊपर!

↖ यह लेबल वाली गरज है।
दूर वाली गरज पार्सल नहीं खोलती।

ज़्यादा हाथी: वह बिजली और दूर गिरी।

अगर तुम्हें गरज सुनाई दे, चाहे दूर ही क्यों न हो: अंदर चलो!

गिनती बिजली की चमक से लेकर गरज तक होती है, हाथियों में: "एक हाथी" लगभग एक सेकंड का होता है, और हर तीन हाथी एक किलोमीटर के बराबर। इससे मोटे तौर पर पता चल जाता है कि वह बिजली कितनी दूर गिरी; अगली कहाँ गिरेगी, यह नहीं पता चलता। और गिनती यह भी नहीं बताती कि बाहर कब निकला जा सकता है, और वह, जूलिता के अनुसार, एक दूसरा नियम है, बिना चित्र का: आख़िरी गरज के आधा घंटा बाद।

मैंने धीमे से ख़ुद गिनकर देखा, और मेरे हाथी बहुत तेज़ भागे, उस तरह के जो किसी काम के नहीं होते। मुझे कुछ गिनने की ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि मुझे तो तूफ़ान बहुत पसंद हैं, फिर भी मैंने लिख लिया, कहीं काम आ जाए।

टोन्यो ने मेरे कंधे के ऊपर से लेबल पढ़ा, जैसे वह हर उस चीज़ को पढ़ता है जो उसकी नहीं होती।

“‘बिजली’ तूफ़ान में डिलीवरी नहीं करती,” उसने कहा, और अपने पीले बैग पर छपे छोटे अक्षर हमें दिखाए: बिजली डिलीवरी · दस मिनट में या मुफ़्त और, जूलिता के आतशी शीशे से, एक तारा: *तूफ़ान को छोड़कर।

“अभी तूफ़ान नहीं है,” जूलिता ने कहा।

टोन्यो ने छोटे अक्षर दोबारा पढ़े, कि कहीं “अभी” के बारे में कुछ लिखा हो। कुछ नहीं लिखा था।

तो टोन्यो हमारे साथ आया। वह हाथी एक झटके में गिनता है, “एकदोतीन!”, जैसे वे कोई डिलीवरी हों। टोन्यो के हिसाब से हर तूफ़ान एक किलोमीटर दूर होता है। मुझे नहीं पता कि यह बहादुरी है या हाथियों की कमी।



पाँच बजे मैं रेनकोट लेने सड़क पार करके अपने घर गया; जूलिता नीचे गेट पर मेरा इंतज़ार करती रही। मम्मी फ़्लैट के दरवाज़े पर रेनकोट हाथ में लटकाए मेरा इंतज़ार कर रही थीं। नारंगी रंग के बारे में उनकी एक थ्योरी है: कि वह दूर से दिखता है। मुझे आज तक नहीं पता चला कि वे कहाँ से देखने की सोचती हैं।

“नारंगी वाला पहन लो,” उन्होंने कहा। “पक्का जाना है? तुम तो जब बादल गरजते हैं...”

“बाय, मम्मी!”

मैं सीढ़ियाँ दो-दो करके उतर गया। मैंने हिसाब लगाया था कि सीढ़ियों की गूँज में मम्मी का आधा वाक्य रास्ते में खो जाएगा। नहीं खोया। जूलिता नीचे थी।

“तुम तो जब बादल गरजते हैं...” क्या? –ज.

हमने बड़ा पुल पार किया, आसमान और काला होता जा रहा था। रात को उसे जहाज़ों के लिए उठा देते हैं; दिन में उसे सब पार करते हैं, और उस वक़्त उसे सिर्फ़ हम पार कर रहे थे, और उलटी दिशा में जाता एक जल्दी में आदमी, जो तूफ़ान आने पर सही दिशा है। मैंने नं. 2 को दोनों हाथों से, बिल्कुल सीधा पकड़ रखा था। टोन्यो साइकिल को धकेल रहा था: खोए बिना "बिजली" को इतना धीमे चलते मैंने कभी नहीं देखा।

बीच में पहुँचकर जूलिता ने पानी की ओर अपना रुखा-सा सलाम किया, हाथ से, छोटा-सा, बिना मुस्कुराए, जैसे किसी ऐसे को जो उसे पसंद नहीं। वह उस रात से ऐसा करती है जब हम पैदल पुल पर थे। मुझे लगता है यही सौदा है: वह सलाम करती है और पानी उसे गुज़रने देता है।

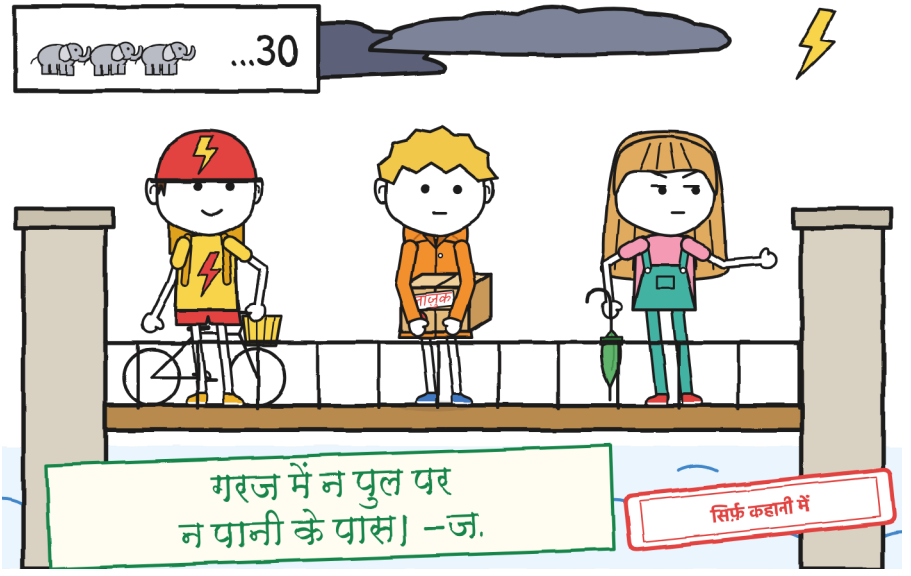

बहुत दूर, आसमान चमक उठा।

वह बादलों के पीछे एक झपक थी, बिना आवाज़ की, जैसे कोई उस कमरे की बत्ती जला-बुझा रहा हो जिसमें तुम नहीं हो। जूलिता झटके से रुक गई और आँखें बंद करके

धीमी आवाज़ में हाथी गिनने लगी। कुछ सुनाई देने से पहले उसने तीस गिने। मैंने उसके साथ मन-ही-मन गिना, अपने बहुत तेज़ हाथियों से, और मेरे बयालीस निकले।

गड़गड़म।

“लगभग दस किलोमीटर दूर गिरी वह बिजली,” उसने अंदाज़ा लगाया। “मौसम की ख़बर में तूफ़ान छह बजे के लिए बताया है।”

“बादल गरजा!” टोन्यो चिल्लाया। “अब खोल सकते हैं?”

“पार्सल खोलने के लिए वह गरज नहीं चलेगी,” जूलिता ने आँखें बंद किए ही कहा। “वह दस किलोमीटर दूर है; लेबल वाली गरज वह है जो ठीक सिर के ऊपर हो: शून्य हाथी। पर अब आवाज़ तो आ रही है: अंदर चलो! भागो!”

मैं नहर वाली सड़क तक भागा, ऐसे दिखाते हुए जैसे मैंने कुछ सुना ही नहीं। न गड़गड़म, न छह वाली बात।

“क्या यह हिच थी?” जूलिता ने रफ़्तार धीमी किए बिना पूछा।

“नहीं,” मैंने कहा। “हिच!”

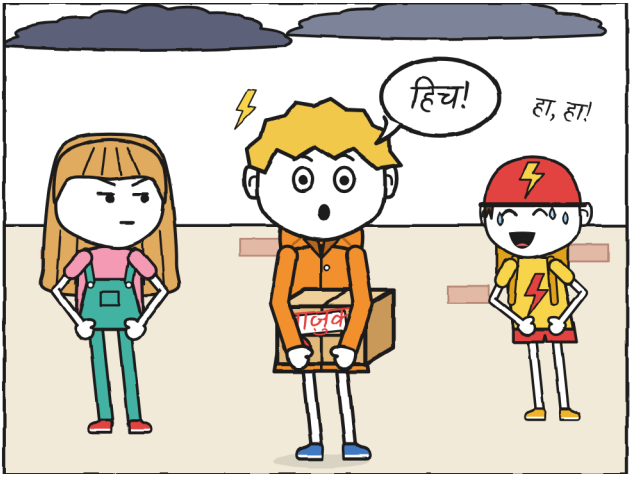

टोन्यो साइकिल के हैंडल पर दोहरा हो गया और इतना हँसा कि साइकिल एक तरफ़ फिसल गई। जूलिता नहीं हँसी। उसने आँखें सिकोड़ लीं, जैसे वह तब करती है जब कुछ ऐसा पढ़ रही हो जो लिखा नहीं है।

एक गरज, एक हिच: यह मुझे बचपन से होता है। अगर तूफ़ान दूर है, तो वह अपने तक रह जाती है; अगर सिर पर है, तो एक और आती है, और एक और, हर तीन सेकंड में, जब तक तूफ़ान चला न जाए। यह डर नहीं है। यह मेरा शरीर मुझसे पूछे बिना करता है, जैसे बड़ा होना या छींकना, और बड़े होने की तरह यह किसी भी तरह का चेहरा बनाने से नहीं रुकता। मुझे पता है, क्योंकि मैंने सारे चेहरे आज़माए हैं।

इसे डर कहते हैं। —ज.

नहर वाली सड़क पर वेरा, लाल बालों वाली, ड्रैगनों के घर के दरवाज़े पर पहले से हमारा इंतज़ार कर रही थीं, जो फ़्लोरा के घर से सटा है, चूरा को गोद में लिए। चूरा ने मुझे देखते ही मेरा चेहरा बना लिया: वह हमेशा ऐसा करती है, एक पल मुझे देखती है, जाँचती है कि मैंने कौन-सा चेहरा पहन रखा है और वही पहन लेती है।

मैंने नं. 2 को टोन्यो की साइकिल की टोकरी में रखा और बाँहें खोल दीं।

“यह उसका पहला तूफ़ान है,” वेरा ने कहा और उसे मेरी बाँहों में दे दिया। “यह तुम्हारी हर बात की नक़ल उतारती है, गुनी। जो तुम महसूस करते हो, उसकी भी। अगर यह डर जाए, तो इसे खींचना मत: यह पकड़ लेती है। तूफ़ान गुज़र जाए, तो फ़्लोरा के आँगन की दीवार पर तीन बार थपथपाना, मैं इसे लेने आ जाऊँगी।”

“मुझे कुछ महसूस नहीं होता,” मैंने जवाब दिया। “मुझे तूफ़ान बहुत पसंद हैं।”

मैंने यह सीना तानकर कहा, और चूरा ने मेरी बाँहों में बिल्कुल वैसे ही सीना तान लिया, गर्दन खींचकर: जिसे तूफ़ान बहुत पसंद हों, उसकी हूबहू तस्वीर, दो साइज़ में। वेरा ने हम दोनों को देखा, एक के ऊपर एक, एक ही चेहरे के साथ, और कुछ नहीं बोलीं। वेरा बातें तब के लिए बचा रखती हैं जब उनकी ज़रूरत पड़े।

दूर कहीं बादल गरजा। मैंने हिच किया। चूरा ने हिच किया, और उसकी नाक से धुआँ निकला।

“अंदर चलो, अभी!” वेरा ने बात काटी और हमें फ़्लोरा के दरवाज़े की ओर धकेल दिया।

फ़्लोरा का घर गमलों वाला घर है, उस बालकनी वाला जिससे दो शनिवार पहले एक आंटी ने हमें देखा था, हवा में पानी का मग उठाए।

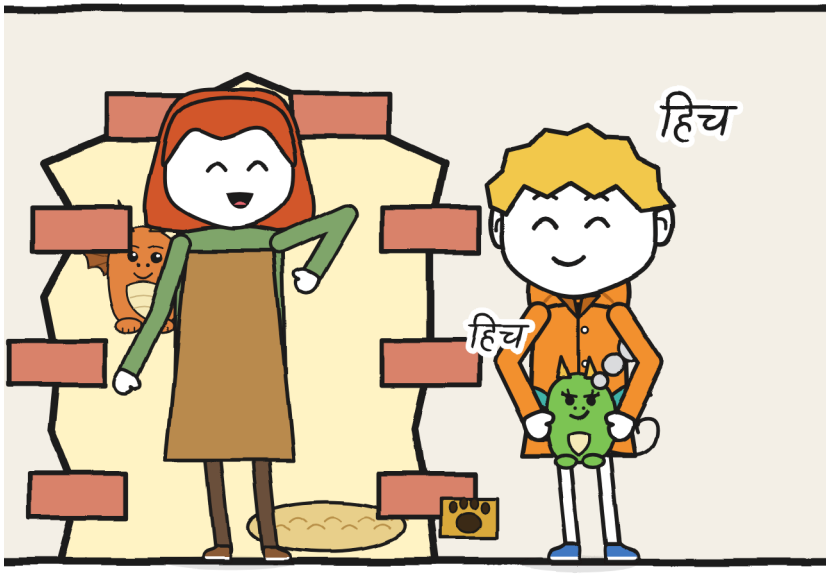

उन्होंने हमारे दस्तक देने से पहले ही दरवाज़ा खोल दिया: सलेटी जूड़े और चश्मे वाली एक महिला, बाग़बान वाला हरा एप्रन पहने जिसमें ढेरों जेबें थीं, और उनके पैरों के बीच सफ़ेद सीने वाला एक सलेटी बिल्ला, जिसने हमें ऐसे देखा जैसे किसी ऐसे पार्सल को देखा जाता है जो उसके लिए नहीं था। उन्होंने डिब्बे को देखा। आसमान को देखा। चूरा को देखा। इसी क्रम में, और हर चीज़ को उतना ही समय दिया, जो बहुत कम था।

“वेरा की बच्ची से कहना कि मेरे फ़र्न न झुलसाए,” उन्होंने कहा। “अंदर आओ, पानी आ रहा है। पर पहले बता दूँ: मैं पत्थरों पर दस्तख़त नहीं करती।”

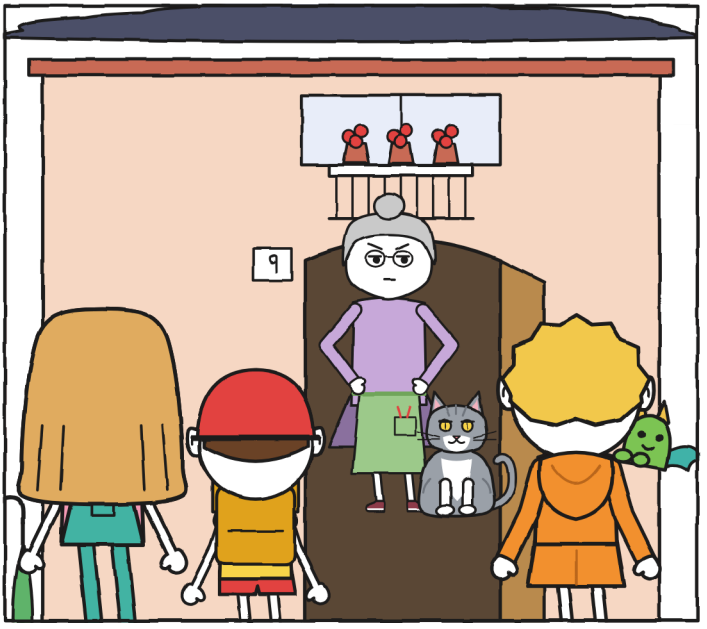

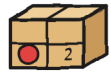

अध्याय 2

गरज!

फ़्लोरा की रसोई पौधों से भरी है: मेज़ पर, फ़र्श पर, छत से लटके हुए। सबने मिलकर कुछ गलियारे छोड़ रखे हैं जिनमें चलना आना चाहिए। फ़र्न, जिन्हें चूरा को नहीं झुलसाना था, ठीक उसकी नाक की ऊँचाई पर थे।

पीछे एक काँच का दरवाज़ा ग्रीनहाउस में खुलता है; पिछला दरवाज़ा, लकड़ी का, ऊपर काँच और नीचे बिल्ली वाले छोटे दरवाज़े के साथ, आँगन में खुलता है। काँच से दिख रहा था कि आँगन के पत्थरों पर बारिश शुरु हो रही है। गीली मिट्टी की महक आ रही थी, जिसे मैं पार्कों से जानता था, रसोइयों से नहीं।

ग्रीनहाउस के काँच पर पेंट की हुई कुछ बूँदें थीं। एक ऊपर चढ़ने लगी। दूसरी ने उसे पीछे छोड़ दिया।

"R. के जादुई शीशे," फ़्लोरा ने कहा। "बारिश को तभी आने देते हैं जब मैं चाहूँ। बिजली को कभी नहीं। आवाज़ हमेशा निकल आती है, क्या करें।"

मैंने इसे R. वाली सूची के लिए रख लिया: R. को जादुई शीशे बनाने आते थे, और तेईस कोशिशों के बाद भी एक शीशी पहुँचाई नहीं जा सकी थी।

फ़्रिज पर एक मैग्नेट एक तस्वीर थामे था। और सिंक के पास एक कील से, एक कड़ाही और सूखी जड़ी-बूटियों के गुच्छे के बीच, दो हत्थों वाली स्टील की एक छलनी

लटक रही थी। मैंने उसे अंदर आते ही देख लिया, पौधों से भी पहले: आदमी को वही चीज़ तुरंत दिखती है जिसे वह एक हफ़्ते से ग़लत डिब्बों में ढूँढ रहा हो।

टोन्यो ने बारिश की वजह से साइकिल गलियारे में रख दी और ख़ुद उसके पास रसोई के दरवाज़े पर खड़ा रहा, आधा शरीर अंदर: टोन्यो ऐसे ही उन जगहों में घुसता है जो उसकी नहीं होतीं। बिल्ला उसकी टाँगों के बीच से निकला, और टोन्यो ज़रूरत से कहीं ज़्यादा हट गया। मैंने सोचा कि वह नहीं चाहता होगा कि कोई उसकी साइकिल को छुए।

फ़्लोरा ने डिब्बा मेज़ पर रखा, कोहनी से दो गमले हटाए और बिना पूछे उसे खोल दिया। बिना पूछे और बिना लेबल पढ़े: उन्हें पता था कि बहुत बार खोले हुए डिब्बे का गत्ता कहाँ से ढीला पड़ता है। अंदर, भूसे के बीच, कॉर्क के ढक्कन वाली काँच की एक शीशी थी, और शीशी में आठ सलेटी गोलियाँ।

“इस पर लिखा है कि गरज से पहले नहीं खोलना!” जूलिता चिल्लाई।

जूलिता ने उँगली से लेबल की ओर इशारा किया। मारा की तीसरी शर्त उतनी ही देर चली जितनी देर में एक महिला डिब्बे का ढक्कन उठाती है।

“आज मैंने डिब्बा खोला है, शीशी नहीं,” फ़्लोरा ने कहा। “अंदर क्या है, यह मुझे पहले से पता है: R. ने मुझसे कंदीलों का वादा किया था, और आ रहे हैं पत्थर।”

यह किसी पुरानी शिकायत जैसा सुनाई दिया, उन शिकायतों जैसा जो अब किसी को सुनाने के लिए नहीं कही जातीं, बस इसलिए कही जाती हैं कि बारी आ गई है। मैंने शीशी को देखा। गोलियाँ सलेटी और चिकनी थीं, छोटे अखरोट जैसी, और उतनी ही स्थिर जितने सिर्फ़ पत्थर होते हैं। मैं यह नहीं कह सकता था कि वे पत्थर नहीं थे। डायरी में, शीशी के बगल में, मैंने एक तीर बनाया: “पत्थर?” किसी ने उसमें एक और जोड़ दिया, हरे रंग में: “कंदील?”

“कंदील क्या होता है?” मैंने पूछा।

जो कंदील मैं जानता था, वे कागज़ के होते थे, रंगीन, जो त्योहारों में दो बालकनियों के बीच रस्सी पर टाँगे जाते थे; पहली बारिश तक चलते थे। पर यह भी नहीं लगता था कि कोई मुहर लगाकर पत्थर भेजेगा।

"'बिजली' में पत्थर किलो के भाव लिए जाते हैं," टोन्यो ने दरवाज़े से कहा।

किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। उसने भी नहीं।

फ़्लोरा फ़्रिज के पास गईं, मैग्नेट से तस्वीर उतारी और हमारे सामने, शीशी के बगल में मेज़ पर रख दी।



वह एक पुरानी तस्वीर थी: नहर के किनारे की सैरगाह, रात में, किनारे पर नीची, गोल छोटी रोशनियों की एक क़तार, एक के पीछे एक, वहाँ तक जहाँ पैदल पुल शुरू होता है। वे स्ट्रीट लाइटें नहीं थीं: वे ज़मीन से निकल रही थीं, जैसे किसी ने बल्ब बो दिए हों। सामने, पीठ किए, दो लोग कुछ लगा रहे थे: एक का जूड़ा बँधा था; उसके बगल में भूसे की एक टोपी थी, इतनी बड़ी कि उसके नीचे जो भी था, दिखता ही नहीं था। मैंने टोपी के बारे में

नहीं पूछा। फ़्लोरा ने टोपी के बारे में कुछ नहीं कहा। दो चुप्पियों के बीच एक पूरा इंसान समा सकता था।

"ऐसे पौधे जो बिजली की चमकों की रोशनी सँभाल लेते हैं और रात भर जलते हैं," फ़्लोरा ने कहा। "बीज R. की तरफ़ से आते थे, तूफ़ानी रातों में, पहले से जागे हुए; मिट्टी मैं डालती थी। सोया हुआ बीज मैंने कभी नहीं देखा। कंदील एक-एक करके बुझते गए, और R. का आना फिर कभी नहीं हुआ: अब यह शीशी आई है।"

फ़्लोरा ने तस्वीर वापस फ़्रिज पर लगा दी। वह टेढ़ी लग गई। उन्होंने उसे उँगली से सीधा किया और एक पल और वहीं खड़ी रहीं।

इसी वजह से नहर इतनी अँधेरी थी। पैदल पुल की बत्तियाँ बुझ गई थीं और किसी ने उन्हें फिर नहीं जलाया था। इसी वजह से उससे इतना डर लगता है।

डरावना था। मुझे तो बहुत: मैंने इसे अँधेरे में पार किया। –ज.

जूलिता ने यह नोट फ़्रिज की तस्वीर से नज़र हटाए बिना लिखा। पैदल पुल वही तख़्ता है जो नहर के ऊपर है और जिसे हमने दो शनिवार पहले पार किया था, वह पीठ किए और मैं उसे बताता हुआ कि कहाँ पैर रखना है।

"R. का वादा हमेशा पूरा होता है," फ़्लोरा ने कहा। "देर से, पर होता है। इस बार चूक हो गई है।"

मैंने दोनों वाक्य अलग एक पन्ने पर लिख लिए, उसी पर जिस पर बढ़ती जाने वाली सूचियाँ होती हैं: "R. के बारे में हम क्या जानते हैं", जिस पर एक सवालिया निशान वाली तस्वीर बनी है। उसमें दो पंक्तियाँ थीं, दोनों डायरी नंबर 1 की: मारा के अनुसार ख़राब लिखावट, और R. का पहला अक्षर पढ़ते हुए वेरा का चेहरा। जादुई शीशों वाली बात के साथ उस शाम उसमें तीन पंक्तियाँ और जुड़ गईं, और तस्वीर वैसी की वैसी रही।

"और क्या इसे कभी किसी ने गरज के बाद खोला है?" मैंने पूछा।

फ़्लोरा ने चश्मे के ऊपर से मुझे देखा। मैंने हाथ नीचे कर लिया, जो न जाने क्यों मैंने पूछने के लिए उठा रखा था।

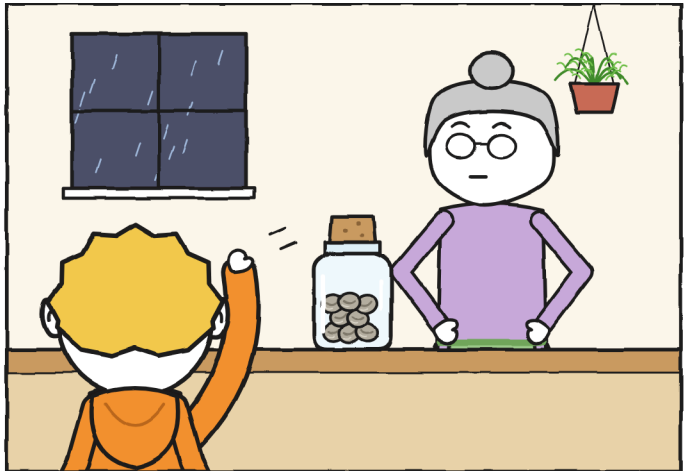

“मैं किसी का इंतज़ार नहीं करती,” उन्होंने कहा। “बादल की गरज का भी नहीं।”

जूलिता ने बिना ध्यान दिए सिर हिला दिया। मैंने देखा, और चुप रहा।



फ़्लोरा के बिल्ले का नाम गरज है। यह उसके नीले कटोरे पर लिखा है, सफ़ेद अक्षरों में, बिल्ली वाले छोटे दरवाज़े के बगल में, और मैंने इसे डायरी में उतार लिया, कटोरे के चित्र के साथ और मोटे अक्षरों में, क्योंकि आगे चलकर यह मायने रखेगा: गरज। मैं उन सबके नाम लिख लेता हूँ जो मुझे डरा सकते हैं; यह मैंने उस पार्सल से सीखा जिसके दाँत निकले थे। वह बारिश के बादल जैसा सलेटी है, सफ़ेद सीने और पीली आँखों वाला, और जब वह फ़्रिज के पास लेटता है तो इतनी धीमी और लगातार घुरघुराहट करता है कि दूर की किसी गरज जैसी लगती है, उनमें से जो अभी हिच नहीं करवातीं।

तूफ़ान का इंतज़ार करते हुए रसोई में सब कुछ हुआ और कुछ भी नहीं हुआ।

जूलिता मेज़ पर उँगलियों से ताल दे रही थी, टक, टक, टक, शीशी के बगल में, उस इंसान की लय में जिसने मौसम की ख़बर छह बार देखी हो और अब बस यही चाहता हो कि तूफ़ान शुरू हो जाए। फ़्लोरा ने बिस्कुट का एक डिब्बा खोला और बीच में रख दिया, बिना "लीजिए" कहे; समझ में आ गया। टोन्यो, जिसने इसके लिए भी हेलमेट नहीं उतारा था, बिस्कुट चबा रहा था जब दूर कहीं गरज हुई, एक गड़गड़म जो लगभग गड़गड़म था ही नहीं। मैंने हिच किया। चूरा ने हिच किया, और उसकी एक छोटी-सी लपट टोन्यो के बिस्कुट के आगे से निकली और उसे सुनहरा कर गई। टोन्यो ने उसे देखा, सूँघा और फिर भी खा लिया।

फ़्लोरा ने बिना कुछ कहे पानी की एक बाल्टी, जो उन्होंने पहले से तैयार रखी थी, खिसकाकर चूरा के बगल में फ़र्श पर रख दी। और गरज ने, जो अब तक ऐसे बर्ताव कर रहा था जैसे हम हैं ही नहीं, चूरा को देखा, उसकी पूरी पीठ के रोएँ खड़े हो गए और वह मोटी पूँछ लिए उसके सामने तनकर खड़ा हो गया। चूरा मेरे पैरों के पीछे छिप गई। मैं, बिना जाने, जूलिता के पीछे छिप गया। हम क़तार में खड़े थे: एक बिल्ला, एक बच्ची, एक लड़का और मेज़ पर उँगलियाँ टिकाए एक लड़की, जो हिली नहीं।

गरज से भी बुरा उसका इंतज़ार करना है। —ज.

तूफ़ान पास आ रहा था। खिड़की से पता चल रहा था, जो स्लेट के रंग की होती जा रही थी, और शीशी से पता चल रहा था: गोलियाँ, जो अब तक पत्थरों की तरह स्थिर थीं, काँच से टकराकर खनकने लगीं, एक बारीक टिन, जिसे पहले मैंने बारिश समझा और फिर नहीं। हर बार और ज़ोर से। जैसे शीशी के अंदर भी कोई गिन रहा हो। पत्थर नहीं गिनते। मैंने यह सोचा और कहा नहीं: फ़्लोरा एक बार पहले ही चश्मे के ऊपर से मुझे देख चुकी थीं।

जूलिता हर बिजली के साथ धीमी आवाज़ में गिन रही थी: "बारह हाथी।" "नौ।" संख्याएँ घट रही थीं। और हर बार घटने पर मेज़ के नीचे उसका पैर और ज़्यादा हिलता, फ़र्श पर थपथप करता, किसी भी चीज़ की ताल पर नहीं। मैं वहीं से देख रहा था जहाँ बैठा

था। मैंने उससे कहा कि वह फ़र्श में छेद कर देगी; उसने कहा कि वह गिन रही है। जूलिता को कोई नहीं बता सकता कि उसका एक पैर है।

तभी चूरा ने एक और छोटी-सी लपट छोड़ी, बिना हिच के, सिर्फ़ घबराहट में, और गरज, जो बस एक बित्ता दूर था, बिल्ली वाले दरवाज़े से बाहर आँगन में, बारिश में, छलाँग लगा गया, ढक्कन की आवाज़ के साथ: खट। फ़्लोरा ने पिछला दरवाज़ा एक झटके में खोला और चौखट से उसे चिल्लाकर बुलाया, अपनी पूरी आवाज़ से, जो बहुत है:

"गरजSSS!"



अगर कोई मुझसे पूछे, तो जूलिता का हाथ चिल्लाने से पहले ही ढक्कन पर था। किसी ने मुझसे पूछा नहीं।

और जूलिता ने शीशी खोल दी।

पॉप!

वह एक छोटी, गोल, कॉर्क वाली आवाज़ थी, जो साफ़-साफ़ सुनाई दी क्योंकि रसोई में आधे सेकंड तक और कोई आवाज़ नहीं थी। जूलिता ने ढक्कन उठाया, चेहरे पर ऐसा भाव लिए जैसे उसने नियम अक्षर-अक्षर निभाया हो।

"बादल गरजा!" उसने कहा।

बादल नहीं गरजा था। फ़्लोरा चिल्लाई थीं। गरज तो बिल्ला है।

वैसे, मैंने हिच किया। इसलिए नहीं कि बादल गरजा था: इसलिए कि किसी ने मुझसे दो मीटर दूर "गरज" चिल्लाया था, और मेरा शरीर फ़र्क नहीं करता। चूरा ने लपट के साथ हिच किया, और टोन्यो ने दोनों हाथों से कान बंद कर लिए, देर से।

बिल्ले वाली बात मैं थोड़ी देर पहले ही कटोरे के चित्र के बगल में, उसके सफ़ेद अक्षरों के साथ, लिख चुका था, ताकि साफ़ रहे।

वह पेज मैंने बाद में पढ़ा। –ज.

शीशी में बस आठ सलेटी गोलियाँ थीं, ठंडी और स्थिर। कुछ नहीं जला, कुछ नहीं उछला, किसी ने टिन नहीं किया। जूलिता, जो पहली बार में हार मानने वालों में से नहीं है, ने उन्हें सावधानी से मेज़ पर डाला और डंगरी की जेब से आतशी शीशा निकाला। मैंने उन्हें उँगली से गिना: आठ। जब मुझे समझ नहीं आता कि क्या करूँ, तो मैं यही करता हूँ। गिनता हूँ।

"इन पर एक लकीर है," उसने कहा। "बंद आँख जैसी।"

मैंने आतशी शीशे से देखा, उधार माँगकर। हर गोली पर एक बहुत बारीक, मुड़ी हुई रेखा थी। पलक जैसी लग रही थी।

गरज अकेला बिल्ली वाले दरवाज़े से लौटा, भीगा हुआ, बाल चिपके हुए और आधे आकार का, और ठीक चूरा की बाल्टी के ऊपर बदन झाड़ गया, जो पहले से भरी थी। फ़्लोरा ने पिछला दरवाज़ा बंद किया, एप्रन से हाथ पोंछे और मेज़ को देखा।

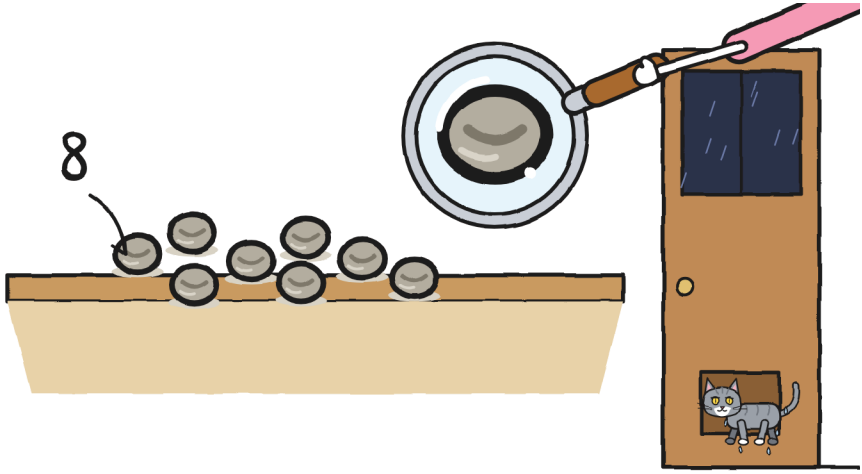

“ये पत्थर हैं,” उन्होंने कहा। “और किसी ने गरज से पहले शीशी खोल दी है।”

यह कहते हुए उन्होंने जूलिता की ओर नहीं देखा। ज़रूरत नहीं थी। जूलिता अपनी टी-शर्ट के रंग की हो गई, गुलाबी, और उसने आतशी शीशा जेब में बहुत धीरे-धीरे रखा, जैसे धीरे रखना इस बात का तरीक़ा हो कि उसने कुछ खोला ही नहीं।

मुझे पौधों के बारे में ज़्यादा नहीं पता। मेरे पास रुई पर उगाई एक मसूर थी जो शिफ़्टिंग में बची नहीं। पर फ़्लोरा ने कहा था “सोया हुआ बीज मैंने कभी नहीं देखा”, और मैं उन बंद लकीरों के बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रहा था।

“ये सोए हुए हैं,” मैंने कहा। “पत्थर नहीं, बीज हैं। इसीलिए लिखा है ‘बादल गरजने से पहले न खोलें’। हो सकता है कोई गरज इन्हें जगा दे। कोई बड़ी, जो खिड़कियों के शीशे हिला दे।”

सोया हुआ बीज एक ऐसा पत्थर है जिसकी योजनाएँ हैं।

फ़्लोरा बैठ गईं, हमारे आने के बाद पहली बार। उन्होंने गोलियों को देखा। फिर बोलीं:

“अगर ये बीज हैं, तो साबित करके दिखाएँ।”

बाहर लगभग रात हो चुकी थी। छह बजे थे। वही वक़्त जो जूलिता ने छह बार देखा था।



बिजली ने सब कुछ सफ़ेद कर दिया।

कोई चेतावनी नहीं हुई। एक पल पहले रसोई रसोई थी, अपने पौधों, फ़्रिज और भीगे बिल्ले के साथ, और अगले पल वह एक रसोई का श्वेत-श्याम चित्र बन गई: हर पत्ता कटा हुआ, हममें से हर एक की परछाईं दीवार से चिपकी हुई, खिड़की रोशनी का एक पन्ना बनी हुई। जूलिता ने गिनने के लिए मुँह खोला और बस "एक हा..." कह पाई।

और तब असली वाली आ पहुँची।

गरज बिजली के साथ ही आ गई: तूफ़ान ठीक ऊपर था। वह आवाज़ नहीं थी; एक धक्का था। मेज़, गिलास और खिड़कियाँ काँपे, और मेरे अंदर भी कुछ काँपा, जो हाथियों के हिसाब में नहीं आता। शून्य हाथी। ठीक ऊपर।

और बिजली चली गई।

पूरी तरह चली गई, फ़्रिज की उस खटक के साथ जो गुनगुनाना बंद कर देता है, और रसोई बंद डिब्बे की तली जैसी काली हो गई। बस आँखें थीं: मेरी, जो मुझे ज़रूरत से ज़्यादा खुली लगीं, बाक़ी सबकी, और दो पीली मेरे बूटों से सटी हुई। किसी ने कुछ नहीं कहा। खिड़कियों पर बारिश सुनाई दे रही थी और, बहुत नीचे, एक छोटी, तेज़ साँस जो मेरी साँस की लय में चल रही थी।

मैंने हिच किया।

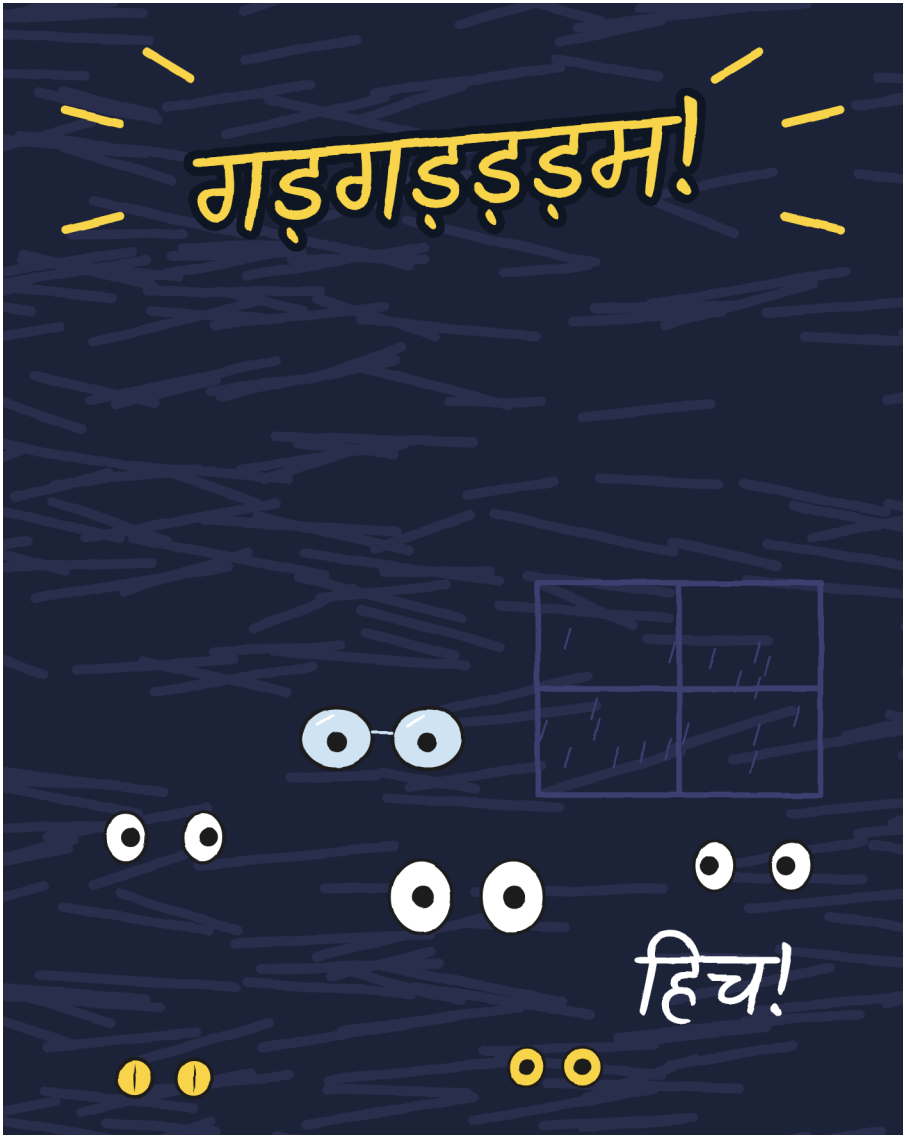

चूरा ने हिच किया, और उसमें से एक बड़ी लपट निकली।

एक सेकंड के लिए पूरी रसोई दिख गई।

मेज़ ख़ाली थी।

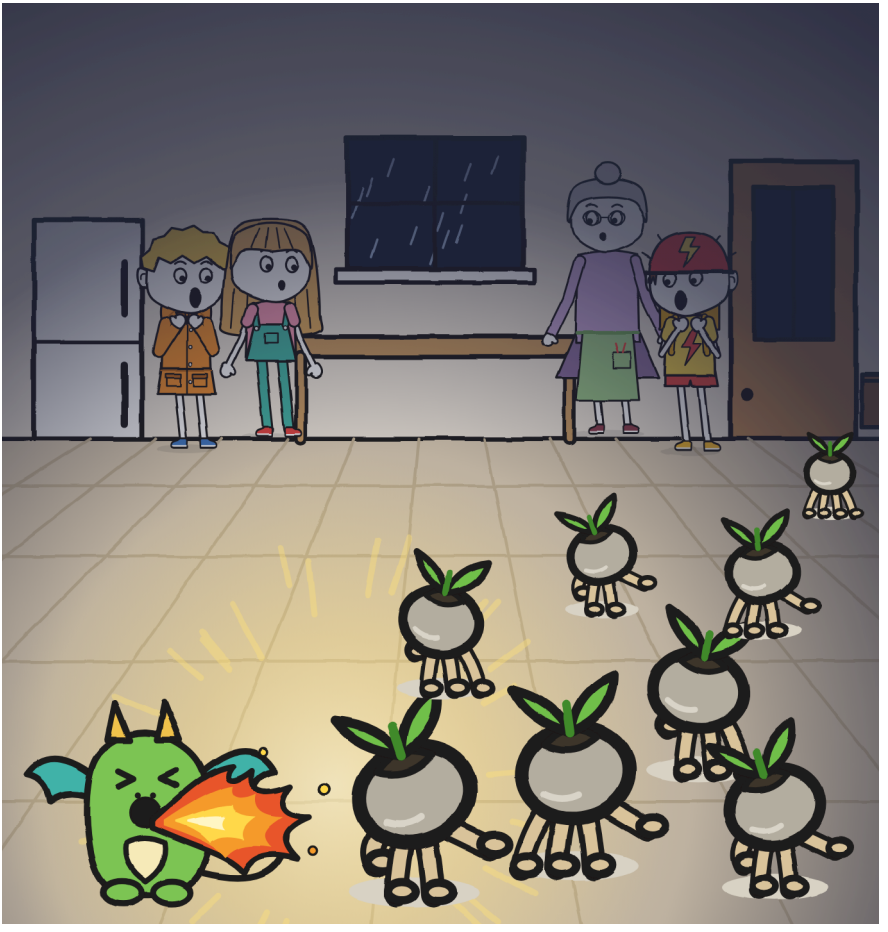

पत्थरों के पाँव थे।



अध्याय 3

जब तुम नहीं देखते, ये हिलते हैं

अँधेरे में एक नन्ही-सी बारिश सुनाई दी: टिक, टिक, टिक। बाहर वाली गिर रही थी। यह वाली फ़र्श पर दौड़ रही थी।

बिजली चमकी।

बीज और दूर थे। स्थिर, अपने चार नन्हे पैरों और दो पत्तियों के साथ। एक ने अपना एक पैर हवा में रखा हुआ था। उसके चेहरे पर वही भाव था जो मेरे चेहरे पर होता है जब मम्मी पूछती हैं कि किसने क्या छुआ।

फिर अँधेरा: टिक, टिक, टिक।

मैंने हिच किया। चूरा ने हिच किया। उसकी लपट ने तीन बीजों को आधे क़दम पर पकड़ लिया। बाक़ी दौड़ते रहे।

यह तो "स्टैच्यू" का खेल है। बीजों के साथ। –ज.

फ़्लोरा ने टॉर्च जलाई। उसे एक बीज पर साधा और उसे वहीं जमा दिया। फिर दूसरे पर। पहला बीज भाग निकला।

"ये बीज हैं! ये जाग गए हैं!"



वे नाराज़ आवाज़ बनाना भूल गई थीं।

“मैंने भी यही कहा था,” मैं बुदबुदाया।

“तो इन्हें भागने से रोकने में मेरी मदद करो।”

जूलिता झुक गई। उसके एक हाथ में अब भी ढक्कन था। उसने उसे डंगरी में रखा और दूसरा हाथ एक बीज के सामने खोल दिया।

एक उँगली से चूक गई।

अगली बिजली में हमने देखा कि वे कहाँ जा रहे हैं: सब बिल्ली वाले दरवाज़े की ओर।

फ़्लोरा ने एक विशाल गमला घसीटकर उनका रास्ता रोक दिया।

“वे तूफ़ान की गीली मिट्टी ढूँढ रहे हैं। यहाँ सिर्फ़ नल की मिट्टी है। बाहर मिट्टी लगभग है ही नहीं: पत्थर हैं, एक पगडंडी है और नहर। अगर वे निकल गए, तो बारिश उन्हें पानी में बहा ले जाएगी।”

मैंने काँच से बाहर देखा। चार धागे जैसे पैरों वाला बीज वहाँ उतनी देर टिकता जितनी देर पानी के गड्ढे में काग़ज़।

बिल्ली वाला दरवाज़ा बंद हो गया। पर अब वे पूरी रसोई में, अँधेरे में, फैले हुए थे, और रसोई में छिपने की सौ जगहें होती हैं: फ़्रिज के नीचे, बाल्टी के पीछे, गमलों के बीच, पानी के मग के अंदर और मेज़ के नीचे, जहाँ मैं था, फ़्लोरा की छलनी पहने हुए। मेरे घर में,

जब बादल गरजते हैं, मैं एक पहन लेता हूँ; यह सिंक के पास कील पर टँगी थी, और मेरे हाथों ने उसे अपने आप उतार लिया था।

हमने सब कुछ आज़मा लिया:

1. जूलिता ने एक बीज पर कपड़ा फेंका, उसके ऊपर कूद पड़ी, कपड़ा उठाया और नीचे था... गरज। म्याऊँऊँ! वह कपड़े से ऐसे निकला जैसे बिल्लियाँ हर जगह से निकलती हैं: बेहद नाराज़, और ठीक ही।
2. टोन्यो ने एक का पीछा कुर्सियों के नीचे हाथों-घुटनों के बल किया, और गरज, जिसे नहीं पता कि डिलीवरी बॉय क्या होता है, उसकी पीठ पर चढ़ गया और वहीं बैठा रहा, सवारी से बेहद ख़ुश। हटो!
3. मैंने मेज़ के नीचे से हिच किया। चूरा ने हिच किया, और उसकी लपट ने जूलिता के हाथ से दो बित्ते दूर एक बीज को जमा दिया, जिसने उसे पकड़ लिया। "एक!"
4. फ़्लोरा ने टॉर्च एक और पर गड़ाई और उसे उठा लिया, उतने इत्मीनान से जैसे कोई ज़मीन से गिरा जामुन उठाता है। "दो!"

गरज भी उनका पीछा कर रहा था। वह लगभग अँधेरे में देख लेता है। हम नहीं। जब बाक़ी लोग कुर्सियों से टकराते और टटोलते हुए एक-दूसरे से माफ़ी माँगते थे, गरज बीच में से बिना कुछ छुए निकल जाता था, और साफ़ दिखता था कि वह किसी और लीग में खेल रहा है।

टोन्यो को तूफ़ानों से डर नहीं लगता। टोन्यो को बिल्लियों से डर लगता है।

हमें यह तब पता चला जब गरज उसकी पीठ से उतरा और टोन्यो ने राहत की साँस लेने के बजाय एक कुर्सी पर चढ़ना चुना और वहीं तनकर खड़ा रहा, हेलमेट पहने, पैरों को ज़मीन से उतना दूर रखे जितना उसकी टाँगें इजाज़त देती थीं। गरज उसके नीचे बैठ गया, बड़े इत्मीनान से, और उसे शोकेस की तरह देखने लगा।

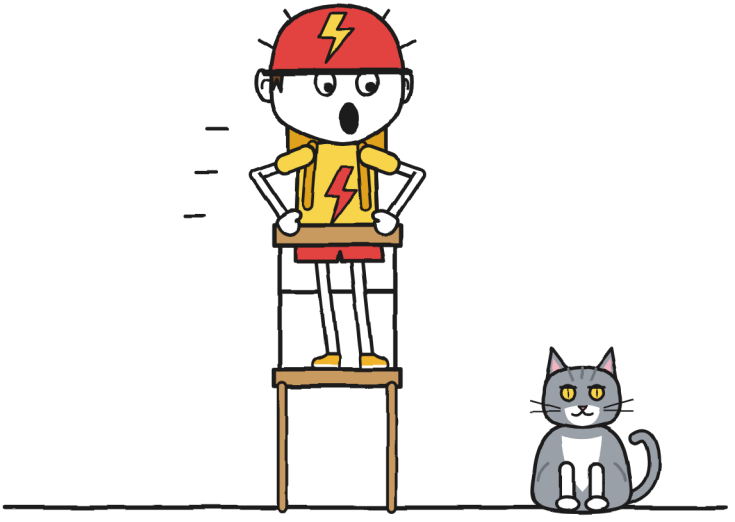

“यह बिल्ला नहीं है!” जूलिता ने उससे कहा। “यह गरज है!”

“और बुरा!”

मैं यह बिना हँसे लिख रहा हूँ, क्योंकि मुझे हँसने का हक़ नहीं। टोन्यो का डर कुर्सी पर चढ़ा हुआ था, जहाँ सबको दिखता था। मेरा मेज़ के नीचे था, एक छलनी के साथ।

मेज़ के नीचे का प्रोफेशनल। –ज.



वहाँ नीचे से, हर बिजली के साथ, मुझे पूरा फ़र्श दिखता था। बीज कुर्सियों के बीच चक्कर काटते थे, पर हमेशा गमले को धकेलने बिल्ली वाले दरवाज़े पर लौट आते थे। वे ज़्यादा ज़ोर से नहीं धकेलते थे। पर हमेशा धकेलते थे।

तो मैंने एक नक़्शा बनाया।

मैंने उसे बिजलियों में बनाया, हर बिजली पर एक लकीर, डायरी घुटने पर टिकाए: जल्दी सोचने का मेरे पास यही एक तरीक़ा है। ऐसे नक़्शे की रेखाएँ टेढ़ी होती हैं, पर तीर सब एक ही जगह जाते हैं, और वही ज़रूरी था। बिल्ली वाले दरवाज़े के सामने मैंने रोशनी की दीवार बनाई और उसके बगल में एक साइकिल: पैडल = रोशनी।

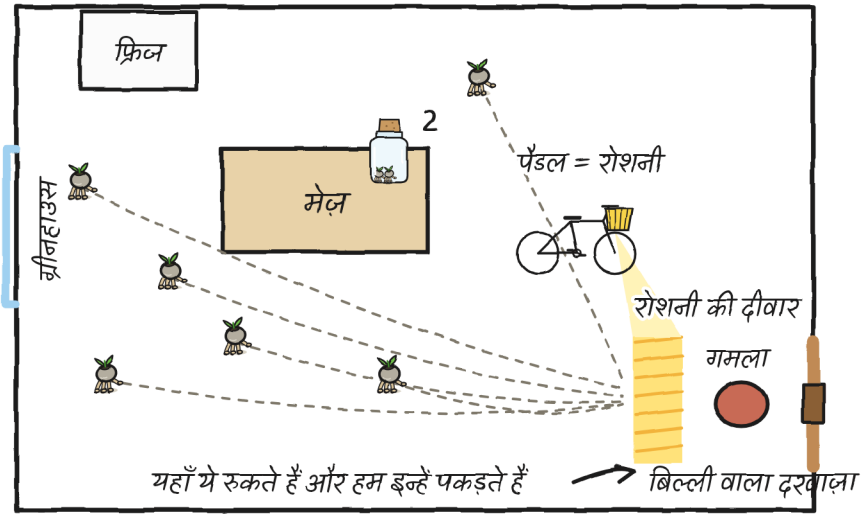

“टोन्यो, क्या तुम्हारी हेडलाइट पैडल मारने से जलती है?”

“बिल्कुल।”

“तो आज तुम रोशनी की डिलीवरी करोगे।”

फ़्लोरा ने नक़्शे पर रोशनी डाली। जूलिता मेज़पोश के नीचे से झाँकी। टोन्यो कुर्सी से उतर आया: अपनी साइकिल के लिए वह कहीं से भी उतर जाता है।

हमने साइकिल को उसके स्टैंड पर खड़ा किया, हेडलाइट बिल्ली वाले दरवाज़े की ओर करके। "बिजली" का डायनमो पिछले पहिये से सटा है: पहिया घूमे तो रोशनी। और टोन्यो ने पैडल मारे।

उसने ऐसे पैडल मारे जैसे पहले कभी नहीं मारे थे। ख़ासकर जब गरज उसके ऊपर चढ़ गया।

यह देखे बिना समझ नहीं आता, इसीलिए मैंने इसे बनाया।



एक साइकिल जो कहीं नहीं जा रही थी, एक ऐसे इंसान के पैडल से जो कहीं बहुत दूर होना चाहता था। रोशनी हेडलाइट से निकली, पहले पीली और काँपती हुई, फिर सफ़ेद और सीधी, और बिल्ली वाले दरवाज़े के सामने दीवार की तरह जम गई। यह मेरी रोशनी की दीवार थी, हक़ीक़त में, पसीने की बूँदों के साथ।

बीज रोशनी तक आते और स्थिर हो जाते, और हम उन्हें एक-एक करके पकड़कर शीशी में डालते जाते। तीन। चार।

मैं मेज़ के नीचे से निकला और जूलिता के बगल में रोशनी के किनारे पर हाथों-घुटनों के बल आ गया। बीज लकीर पर पैर रखते और रुक जाते। उनका वज़न कंचे से थोड़ा ही ज़्यादा था। उँगलियाँ जल्दी बंद करनी पड़ती थीं: जैसे ही परछाईं उन तक पहुँचती, वे फिर कोशिश करने लगते।

गरज ने एक को मुँह में पकड़ लिया, और फ़्लोरा ने दो उँगलियों से उससे छुड़ा लिया।

“पाँच!” उन्होंने कहा।

छह।

जूलिता ने डंगरी से ढक्कन निकाला और फ़्लोरा ने शीशी बंद की, कॉर्क को कसकर दबाकर, ताकि छहों दोबारा न सोचें। फिर वे हमारी मदद के लिए झुकीं। तभी गरज मेज़ पर कूदा और उसे गिरा दिया।

मैंने उसे आँख के कोने से गिरते देखा, बहुत धीरे-धीरे: शीशी, अपने कॉर्क के ढक्कन के साथ, हवा में पूरा एक चक्कर लगाती हुई। और मैंने टोन्यो को पैडल छोड़ते देखा, साइकिल से गोलकीपर की तरह लंबा होकर निकलते और फ़र्श से एक बित्ते ऊपर दोनों हाथ बंद करते। झपाक!



“बिजली,” उसने कहा, टाइलों पर लेटे हुए, शीशी ऊपर उठाए। “एक सेकंड में या मुफ़्त।”

वह मेरी ज़िंदगी में देखी सबसे तेज़ डिलीवरी थी। मैं इसे यहीं, डायरी में, मानता हूँ, क्योंकि ज़ोर से मुझसे कहा नहीं गया: मुझसे बस एक हिच निकली।

पर उसने पैडल मारना छोड़ दिया था, और रोशनी बुझ गई। और गरज को कोई नहीं रोक सकता: वह बिल्ली वाले दरवाज़े की ओर तीर की तरह भागा।

अँधेरे में: टिक, टिक, टिक। फिर, खड़: गमला, जिसे एक बिल्ले ने हटा दिया जो बाहर जाना चाहता था और चला गया। खटाक: बिल्ली वाला दरवाज़ा। और उसके पीछे, बहुत तेज़ी से, एक और टिक, टिक, टिक, जो गरज का नहीं था।

जब फिर बिजली चमकी, फ़र्श पर एक ही बीज बचा था, और जूलिता ने उसे पकड़ लिया। फ़्लोरा ने शीशी उतनी ही खोली कि वह अंदर जा सके और कॉर्क फिर दबा दिया। सात।

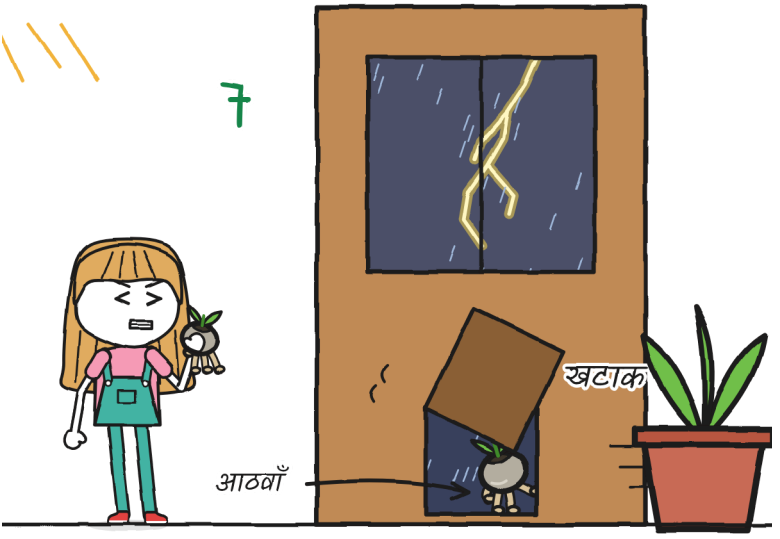

उसी बिजली में मैंने काँच के दरवाज़े से देखा: बारिश में चमकता पत्थरों का आँगन, पगडंडी, और पगडंडी के बीच में एक बहुत छोटा बीज, आधे क़दम पर रुका हुआ, पानी से मुड़ी हुई नन्ही पत्तियों के साथ। फिर रात हो गई। और अगली बिजली में पगडंडी पर कुछ नहीं था।

आठवाँ बिल्ली वाले दरवाज़े से निकल गया था।



“मैं उसे लेने जा रही हूँ!” जूलिता ने कहा, हैंडल पर हाथ रखे।

“बिजली कड़क रही हो तो इस घर से कोई बाहर नहीं जाएगा,” फ़्लोरा ने बात ख़त्म कर दी। वे बहस के मूड में नहीं थीं।

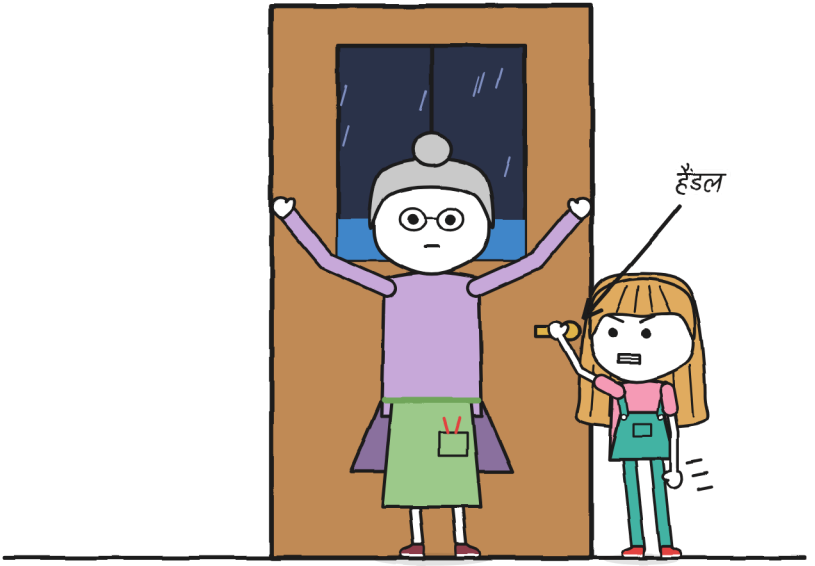

फ़्लोरा दरवाज़े के सामने डट गईं, काँच की ओर पीठ करके, बाँहें फैलाए। जूलिता ने उनके कंधे के ऊपर से देखा: पगडंडी, नहर, बारिश। उसने जबड़ा भींच लिया।

जूलिता ने बहस नहीं की। पर हैंडल भी नहीं छोड़ा।

कुछ देर बाद बिल्ली वाला दरवाज़ा खटाक से बजा। गरज था, दूसरी बार भीगा हुआ, बाल चिपके हुए और चेहरे पर ऐसा भाव जैसे उसने ज़िंदगी में कभी कोई गमला नहीं सरकाया। अकेला आया था। आठवें के बिना। फ़्लोरा ने पैर से गमला फिर बिल्ली वाले दरवाज़े के पास खिसका दिया, कहीं ज़रूरत पड़े, और वह मेज़ के नीचे जा बैठा, जैसे तूफ़ान हमारी ही बात हो।

कुछ देर किसी ने कुछ नहीं कहा; सिर्फ़ मैं बोल रहा था, और मैं जो बोल रहा था वह हिच थी। बाहर आसमान फिर जल उठा।

"बिजली... एक हाथी, दो हाथी।"

गड़गड़म।

"दो," जूलिता ने गिना। "अब भी बहुत पास है।"

उसने यह हैंडल पर हाथ रखे, दरवाज़े की ओर देखते हुए कहा, हमारी ओर नहीं। दो हाथी एक किलोमीटर से कम होते हैं। एक घंटे पहले तक मेरे लिए यह रात की सबसे बुरी ख़बर होती; अब यह दूसरे नंबर पर थी।

"तो अब इन्हें लगाओ," फ़्लोरा ने कहा। "तूफ़ान जाने से पहले। और अँधेरे में।"

"बिजली कड़कते में?" जूलिता ने पूछा, हैंडल छोड़े बिना।

फ़्लोरा ने ग्रीनहाउस के काँच पर चढ़ती बूँदों की ओर इशारा किया।

"जादू अब भी लगा है। बिजली बाहर रहती है। हम अंदर।"

हमने शीशी को देखा। अंदर सात बीज थे, कुछ के नन्हे पैर काँच से चिपके थे, जैसे उसे नाप रहे हों, और काँच में हर बिजली की परछाईं काँप रही थी। आठ में से सात। मैं, जो चीज़ें गिनता हूँ, इस संख्या पर अटक गया: यह आठ नहीं है, पर शून्य भी नहीं है, और उस रात मुझे लगा कि सात से शुरु किया जा सकता है।

“अँधेरे में,” फ़्लोरा ने फिर कहा, चूरा की ओर देखते हुए।

और चूरा ने, मेरी ओर देखते हुए, हिच किया।

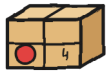

अध्याय ५

हिच

फ़्लोरा ने हमें समझाया कि कंदील कैसे लगाया जाता है, जैसा R. ने उन्हें सिखाया था, और मैंने मार्कर को कसकर पकड़कर लिख लिया: चार क़दम, और सबसे ज़रूरी आख़िरी, समय-सीमा वाला।

कंदील कैसे लगाते हैं

1. 

तूफ़ान की गीली मिट्टी।
(नल वाली नहीं चलेगी।)

2. 

शीशी को मिट्टी पर खोलना।
(पहले खोलोगे, तो वे भाग जाएँगे।)

3. 

सब कुछ अँधेरे में: वे ख़ुद
मिट्टी में उतर जाते हैं।
(अगर तुम इन्हें ख़ुद दबाओगे, तो ये नहीं उगेंगे।)

4. 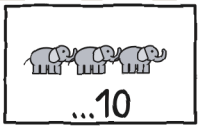

तूफ़ान जाने से पहले:
दस से ज़्यादा हाथी होने पर,
अगली बार तक नहीं लगते।

दस हाथी तक वे जागे रहते हैं। ग्यारह से, सो जाते हैं। –ज.

तो दो समय-सीमाएँ हुईं: बीजों के लिए दस हाथी; हमारे लिए आख़िरी गरज के आधा घंटा बाद।

फ़्लोरा ने मेरे लिखते समय डायरी पर रोशनी डाली। वे क़दम ज़बानी बता रही थीं। मैंने R. के बारे में और कुछ नहीं पूछा।

दूसरे और तीसरे क़दम के बीच मैंने दो बार हिच किया। चूरा ने दो बड़ी लपटें छोड़ीं, और रसोई दो बार फ़्लैश की तरह जल उठी। किसी ने कुछ नहीं कहा; उस वक़्त तक चूरा और मैं घर की रोशनी बन चुके थे। गरज, मेज़ के नीचे, ऐसे सुन रहा था जैसे क़दम उसी के लिए हों।



फ़्लोरा ने ग्रीनहाउस का काँच का दरवाज़ा खोला और सबसे पहले अंदर गईं। चूरा मेरे बूटों से सटी चल रही थी। या मैं ऐसा समझता था।

ग्रीनहाउस रसोई से सटा है। वह लंबा और संकरा है, दीवारों पर गमलों की शेल्फ़ों के साथ और बीच में क्यारी, मिट्टी से भरी एक लंबी मेज़, जिसके नीचे और गमले रखे हैं। दिन में वह हरी और शांत जगह होगी। रात में, तूफ़ान के साथ, हर बिजली पर पूरी छत सफ़ेद हो जाती थी।

छत में एक खिड़की है जो कभी नहीं खुलती। फ़्लोरा ने उसका हत्था घुमाया: खिड़की बंद ही रही, पर पेंट की हुई बूँदें ऊपर चढ़ना बंद करके काँच पर नीचे उतरने लगीं। तब असली बारिश उसके आर-पार हो गई और क्यारी की मिट्टी पर गिरी।

“सब क्यारी पर। एक बूँद फ़र्श पर नहीं,” फ़्लोरा ने हुक्म दिया, जैसे बारिश उन्हीं की हो।

जल्दी ही ताज़ा सींची मिट्टी की महक आने लगी।

ये शीशे सिर्फ़ कहानी में होते हैं। असली तूफ़ान में ग्रीनहाउस बिल्कुल नहीं। आख़िरी पेज देखो। –ज.

“तूफ़ान की गीली मिट्टी,” फ़्लोरा ने कहा। “अब सब अँधेरे में। और जल्दी।”

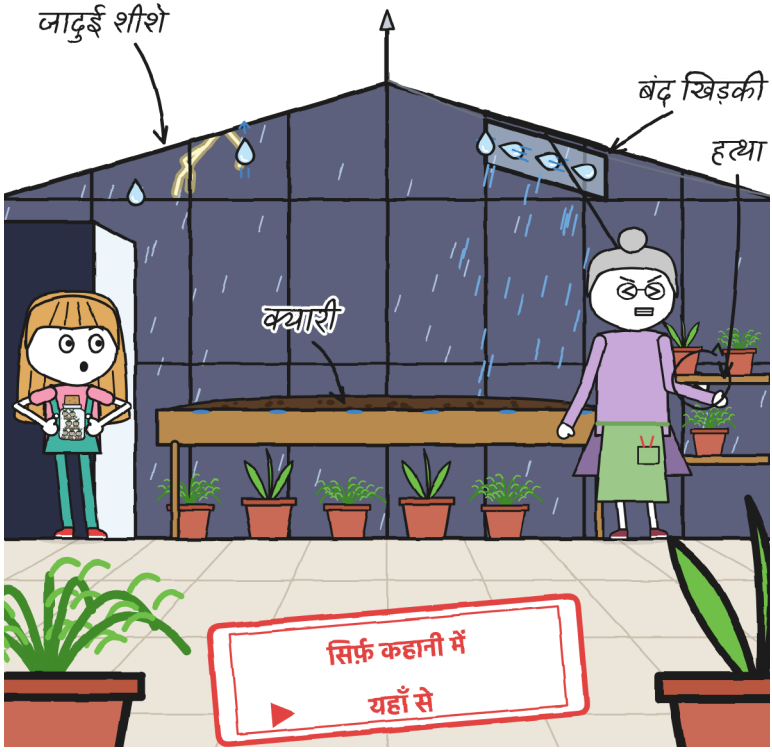

जूलिता दरवाज़े पर रुकी रह गई थी, शीशी हाथों में लिए। उसने हैंडल की जगह शीशी पकड़ ली थी, और उसे उतने ही ज़ोर से भींचे थी।

तभी गमलों के टकराने की आवाज़ आई, और क्यारी के नीचे, पीछे, दो पीली आँखें दिखीं, काँपते दो पंख और, हर तीन सेकंड में, एक छोटी लपट। हिच। चूरा अंदर पहुँच चुकी थी: दरवाज़ा खुलते ही वह फ़्लोरा के पैरों के बीच से घुस गई थी।

फ़्लोरा ने उसे सावधानी से खींचा। चूरा ने गमलों को चारों पंजों से पकड़ लिया।

दो गमलों से चिपकी ड्रैगन की बच्ची अचानक उतनी भारी हो जाती है जितने दो गमले, और फ़्लोरा, जो खरपतवार बिना उनसे पूछे उखाड़ देती हैं, ने उसे छोड़ दिया और घुटनों के बल बैठकर उसे देखती रह गईं।

वेरा ने बताया था। मैंने सुना था। तुम सीना तान रहे थे। –ज.

और रसोई में जब भी मैं हिच करता, ग्रीनहाउस में चूरा जल उठती: दरवाज़े के उस पार गमले नीचे से रोशन हो जाते। हिच: चमक। हिच: चमक। फ़्रिज की बत्ती की तरह, बस दरवाज़ा मैं था और मुझे बंद होना नहीं आता था।

रसोई में हिच काम की थी: लपट, रुका हुआ बीज, पकड़ा हुआ बीज। यहाँ वह उन्हें लगाने नहीं दे रही थी। हर तीन सेकंड में एक लपट के साथ अँधेरा कभी इतनी देर रहता ही नहीं था। गरज और चूरा के बीच, एक छलनी के साथ, मैं था।

मैंने इसे समझने के लिए बनाया।

हमने हिचकी के सारे इलाज आज़माए, चूरा सहायक के तौर पर: वह इलाज की नक़ल उतारती और, इनाम में, हिच की भी।

साँस रोकना: मेरा चेहरा बैंगनी पड़ गया और उसका और हरा। उलटा पानी पीना: मेरी नाक में पानी भर गया। डराने का काम टोन्यो के ज़िम्मे आया, जिसने बिना बताए "भू!" चिल्लाया: डर मुझे लगा, हिच फिर भी हुई, और चूरा की लपट ने उसके हेलमेट पर बनी बिजली झुलसा दी। आख़िरी था चीनी का एक चम्मच, फ़्लोरा का आइडिया: चूरा की चीनी उसके मुँह तक पहुँचने से पहले कैरामल बन गई, और ग्रीनहाउस से बड़ी देर तक मेले की महक आती रही।

हिच की ज़ंजीर

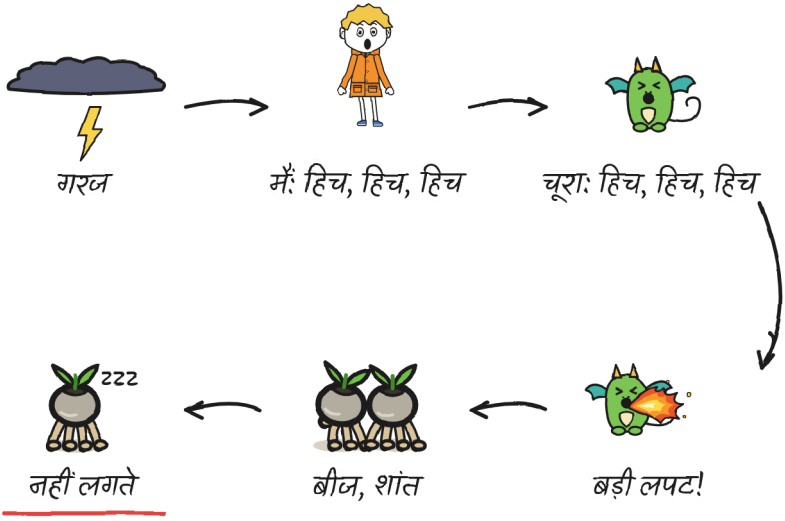

ज़ंजीर को तोड़ना होगा। सबसे आसान कड़ी तुम हो। प्यार से। –ज.

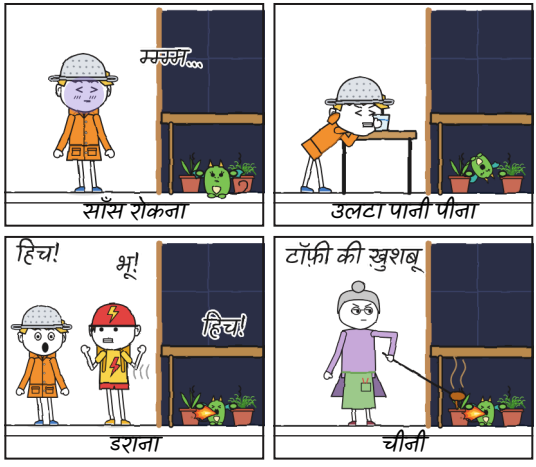

“चार हाथी। पाँच।”

गरज हुई। मैंने दाँत भींच लिए। हिच।

“वह बिजली और दूर गिरी,” जूलिता ने कहा।

सातों बीज शीशी के अंदर चक्कर काट रहे थे। न उन्हें बाहर का रास्ता मिल रहा था, न मुझे चुप होने का तरीक़ा।

“दस तक,” मैंने कहा। “अभी हम कर सकते हैं।”

अगली बिजली पर टोन्यो जल्दी-जल्दी गिनने लगा।

“ऐसे नहीं चलेगा,” जूलिता ने कहा।

उसने मुँह बंद कर लिया। फ़्लोरा बुझी टॉर्च लिए इंतज़ार कर रही थीं। उन्होंने मुझसे जल्दी करने को नहीं कहा। यह लगभग और बुरा था।

“चूरा तुम्हारे डर की नक़ल उतार रही है,” जूलिता ने कहा।

“तो कुछ और उतार ले,” मैंने कहा।

हिच। लपट।

“अगर हम उसे रसोई में ले आएँ?” मैंने पूछा।

“वह पकड़ लेती है। तुम देख चुके हो।”

मैंने ग्रीनहाउस के दरवाज़े को देखा। वह पहले से कहीं ज़्यादा दूर लग रहा था।

जूलिता ने आवाज़ धीमी की।

“पहले, उसके साथ रहो।”

मेरे पास एक प्लान था। बुरी बात यह थी कि वह इस काम का नहीं था।

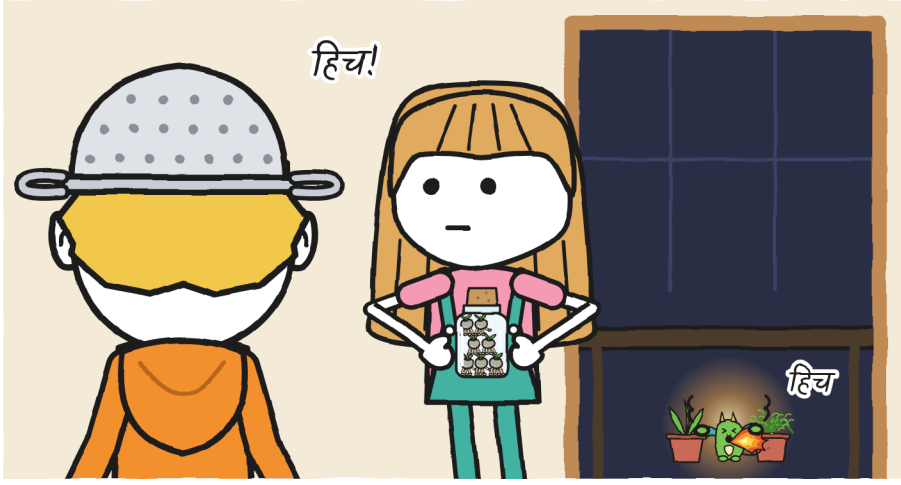

मेरा प्लान, ताकि किसी को पता न चले कि मुझे गरज से डर लगता है:

1. कहना कि मुझे गरज बहुत पसंद है।
2. हिच नहीं करना।
3. ???

पॉइंट 2 उस रात मैंने हिचों के सहारे काटा, इतना कि वह पढ़ा नहीं जाता था। पॉइंट 1 अब भी खड़ा था, पर उसे कोई सच नहीं मानता था, मैं भी नहीं।

और 3 नंबर? –ज.

मैंने कोशिश की। सच में।

मैं दहलीज़ तक गया। जूलिता शीशी लिए एक तरफ़ हट गई ताकि मुझे जगह मिले। किसी ने मुझे धक्का नहीं दिया।

मैंने ग्रीनहाउस के अंदर एक पैर रखा, बड़े इरादे से, छलनी पहने और एक हाथ दरवाज़े की चौखट पर। पैर अच्छे से अंदर चला गया। वैसे ही जैसे सर्दी की सुबह स्विमिंग पूल में पैर जाता है: पैर, हाँ; बाक़ी, देखेंगे।

एक बिजली ने पूरी छत को सफ़ेद कर दिया। मैंने बिना चाहे गिन लिया: पाँच हाथी।

गड़गड़म!

जादुई शीशे आवाज़ को नहीं रोकते थे। पूरी छत ढोल की तरह बज उठी। हिच! क्यारी के नीचे: हिच!, और एक बड़ी लपट।

अगली बात जो मुझे पता है, यह कि मैं फिर रसोई में था, फ़्रिज से सटा हुआ, छलनी भौंहों तक खींचे। मुझे चलकर आना याद नहीं। मेरे पैरों की भी, मेरे हाथों की तरह, अपनी आदतें हैं।

मैं फ़्रिज से टिका रहा, ठंडे हाथों और कानों में धड़कते दिल के साथ। मेरे सिर से दो उँगली दूर सैर वाली तस्वीर थी: छोटी रोशनियों की एक क़तार, जिसे फ़िलहाल मैं हिचों से बुझा रहा था।



दरवाज़े से मैंने ऊपर, काँच की छत से देखा। और बिजली और बिजली के बीच मैंने उन्हें देखा: वेरा के ड्रैगन, तूफ़ान के अंदर उड़ते हुए।

वे चार थे। तीन विशाल, नीला, नारंगी और बैंगनी, बिजलियों के बीच से निकलते हुए जैसे बिजलियाँ किसी रनवे की बत्तियाँ हों; और उनके बीच, एक चौथा, लाल, छोटा। वे छत से बहुत ऊपर उड़ रहे थे, तूफ़ान के अंदर, जहाँ सबसे ज़्यादा गरज होती है, और उन्हें कोई जल्दी नहीं दिख रही थी। एक बिजली उन्हें पूरा-पूरा उकेर देती, सफ़ेद, एक-एक शल्क के साथ; फिर बुझ जाती, और पता चलता कि वे वहीं हैं क्योंकि छत की बारिश छायाओं में बँट जाती थी।

इसीलिए वेरा हमारे साथ नहीं आई थीं: तूफ़ान में वे उड़ने निकलते हैं, और वे घर पर रहती हैं, उनके लौटने तक उनका ध्यान रखती हुईं। मैंने ड्रैगनों को देखा और फिर क्यारी को। चूरा किसी दिन उनके साथ उड़ेगी। उस रात वह गमलों के बीच गोला बनी हुई थी, मेरी नक़ल उतारती हुई।

वे हिच नहीं करते थे।

“चलो, शिकारी,” टोन्यो ने कहा।

मैंने मज़ाक का इंतज़ार किया। वह नहीं आया। टोन्यो ने मेरे कंधे पर हाथ रख दिया।



मैंने छलनी उतारी और फ़्लोरा को दे दी।

फ़्लोरा ने उसे हत्थों से पकड़ा, जैसे असली हेलमेट हो। मैंने दबे हुए बालों पर हाथ फेरा। सिर उतना ही भारी था।

और मैं अंदर गया।

अंदर बारिश ऐसे सुनाई दे रही थी जैसे हज़ार उँगलियाँ एक साथ बज रही हों। मैं हाथों-घुटनों के बल क्यारी के नीचे घुस गया। चूरा वहीं थी, गोला बनी, मेरी ही तरह काँपती हुई।

गीली मिट्टी की महक थी। मैं उसके बगल में झुक गया और घुटने बाँहों में भर लिए। मैं पेट से काँप रहा था; वह पंखों से। हम दोनों मिलकर गमलों को हिला रहे थे।

मैंने गिनने की कोशिश की। “एक हाथी, हिच, दो हा..., हिच।” हिचें हाथियों के बीच घुस गईं। गिनती खो गई।

मैंने बाहर निकलने का सोचा। मेरे पैर शुरू भी कर चुके थे।

चूरा ने गमलों को चारों पंजों से भींच लिया।

मैं रुक गया।

गड़गड़म! मैंने हिच किया। चूरा ने हिच किया। लपट ने हम दोनों को रोशन कर दिया।

उसका चेहरा मेरे जैसा था। शल्कों के साथ।

हम क्यारी के नीचे दो तूफ़ान के शिकारी थे।

तभी दरवाज़े से जूलिता ने धीमे से कहा, बिना हँसे:



मेरे साथ गिनो।



अध्याय 5

मेरे साथ गिनो

और हमने गिना। वह दरवाज़े से और मैं क्यारी के नीचे, उकड़ूँ बैठा, चूरा मेरे रेनकोट से सटी काँपती हुई।

बिजली चमकी।

“एक हाथी। दो हाथी। तीन। चार। पाँच। छह।”

गड़गड़म।

“छह: लगभग दो किलोमीटर,” जूलिता ने कहा। “वह बिजली और दूर गिरी। हम अंदर ही रहेंगे।”

इस बार मुझे पता था कि गरज छह पर पहुँची थी। बिना गिने वह बस एक और गरज होती। गिनने से मुझे इंतज़ार करते हुए करने को कुछ मिल गया था।

चूरा मेरे रेनकोट से सटी काँपती रही।

मैं छलनी आज़मा चुका था। और पानी। और ग्रीनहाउस से निकलना। और फिर अंदर आना।

“मुझे गरज से डर लगता है।”



मैंने यह गमलों की तरफ़ मुँह करके कहा। जूलिता ने फिर भी सुन लिया।

"मुझे पता है। तुमने आज सुबह इसका चित्र बनाया था, जब तुमने कहा था कि तुम तूफ़ान के शिकारी हो। मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी।"

जूलिता मुझे पहले बता चुकी थी कि चूरा मेरा डर उतारती है। मैं कोई और चीज़ ठीक करने में लगा था: हिचकी, गमले, दरवाज़ा।

इस बार मैंने "लेकिन" नहीं कहा।

मैंने उसे ज़ोर से धन्यवाद नहीं कहा। उसे मैं यहाँ छोड़ रहा हूँ।

पढ़ लिया। कोई बात नहीं। –ज.

"मुझे बिल्लियों से डर लगता है," टोन्यो ने कहा।

गरज उसके घुटनों पर सो रहा था। टोन्यो ने हाथ नहीं हिलाए।

“और मुझे उस चीज़ के इंतज़ार से जो आती नहीं,” फ़्लोरा ने कहा। “इसीलिए मैं शीशी तुरंत खोल दिया करती थी।”

और मुझे पैदल पुलों से। यह तो तुम सब जानते हो। –ज.

किसी ने हँसी नहीं की।

बाहर बारिश वैसे ही हो रही थी। चूरा मेरे रेनकोट से सटी रही। क्यारी के नीचे अब मैं अकेला नहीं था।

मैंने धीरे-धीरे साँस ली, जैसे पैदल पुल पर ली थी। अंदर। बाहर। चूरा ने मेरे साथ साँस ली। जब उसका काँपना बंद हुआ, तो मेरे हाथ भी थोड़े ढीले पड़ गए।

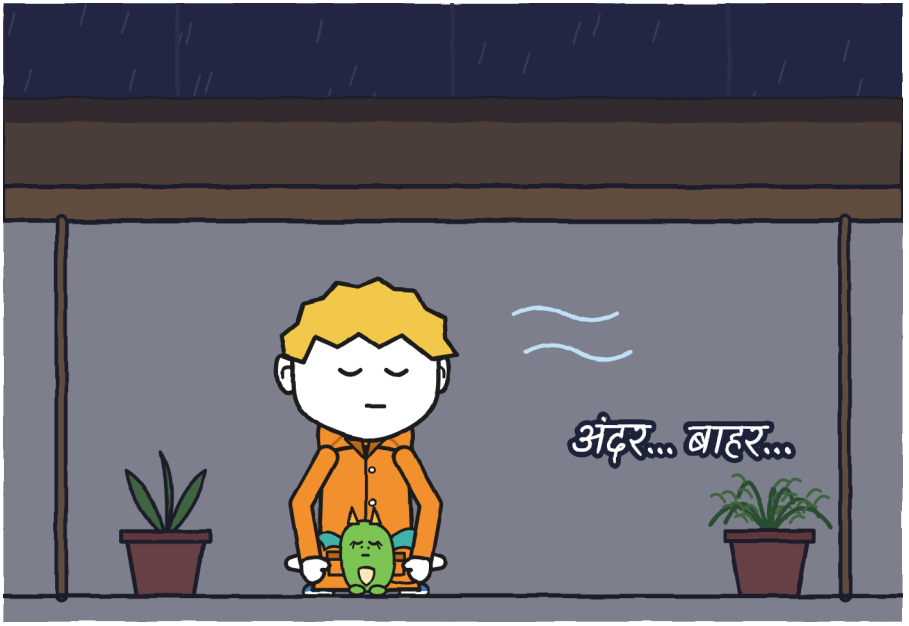

बिजली चमकी। हमने साथ-साथ नौ तक गिना। गड़गड़म। टोन्यो ने, कुर्सी से, धीमे से “एकदोतीन” कहा और तीन पर अटक गया, जहाँ वह हमेशा अटकता है। गरज की नींद भी नहीं खुली।

और मुझे हिच नहीं आई। न उस गरज पर, न अगली पर।

मैंने हिच का इंतज़ार किया और वह आई नहीं। चूरा ने सिर टेढ़ा किया। पूरी रात में पहली बार ग्रीनहाउस उतनी देर अँधेरा रहा जितनी देर की ज़रूरत थी।

"अब!" फ़्लोरा ने फुसफुसाकर कहा।

जूलिता दबे पाँव अंदर आई, अँधेरे में। क्यारी के नीचे झुके हुए मैंने उसके जूते अपने सामने से गुज़रते सुने, धीरे-धीरे, एक के आगे एक, जैसे ग्रीनहाउस का फ़र्श कोई पैदल पुल हो। उसने शीशी गीली मिट्टी पर रखी और उसे खोल दिया। ढक्कन ने एक छोटा-सा पॉप किया, उनमें से जो माफ़ी माँगते हैं; रसोई के पॉप! से बिल्कुल अलग। फिर वह बिना आवाज़ किए, बिना दौड़े, स्थिर पैर के साथ दरवाज़े पर लौट गई।

इस बार शीशी मैंने समय पर खोली। रिकॉर्ड में रहे। –ज.

टिक, टिक, टिक। अँधेरे में, शीशी से कुछ निकल रहा था।

कुछ दिखाई नहीं दे रहा था: सुनाई दे रहा था। जड़ों के पैरों की सात नन्ही आहटें, काँच से नीचे उतरती और गीली मिट्टी पर पड़ती हुई, हर एक की एक टिक, बारिश से थोड़ी धीमी। मुझे लगता है यह मेरी ज़िंदगी में सुनी सबसे छोटी आवाज़ है, और मैंने कभी किसी चीज़ को इतने ध्यान से नहीं सुना, दो शनिवार पहले चूरा के अंडे के छिलके के टूटने को भी नहीं।

बिजली, बहुत दूर। हमने बिना आवाज़ के, सिर्फ़ होंठों से गिना, जूलिता दरवाज़े पर और मैं क्यारी के नीचे: एक हाथी, दो, तीन... सात हाथी, आठ, नौ, दस... गड़गड़म।

दस। एक हाथी और, और सातों अगले तूफ़ान तक मिट्टी पर सो गए होते। दस आख़िरी था जो चलता था।

अगली बिजली में हमने देखा:

शीशी ख़ाली थी, क्यारी के एक सिरे पर लुढ़की हुई। मिट्टी में सात छोटे गड्ढे थे एक क़तार में, बाँसुरी के छेदों जैसे, और आख़िरी में अब भी जड़ का एक नन्हा पैर बाहर झाँक रहा था, जो अंदर घुस रहा था: आख़िरी।

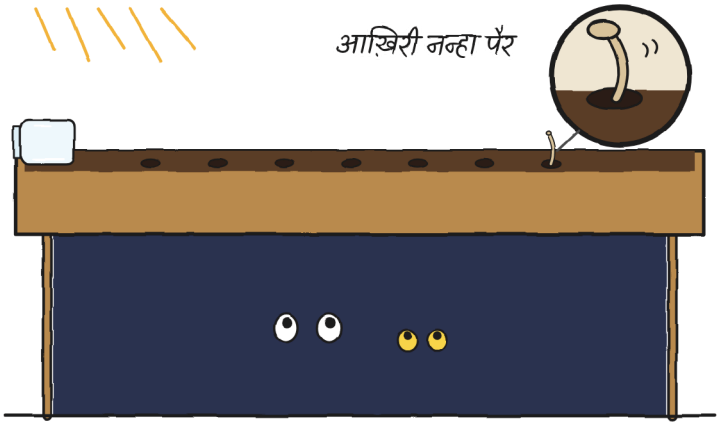

फिर अँधेरा हो गया, और अगली बिजली में नन्हा पैर वहाँ नहीं था।

फिर कुछ देर कुछ नहीं हुआ। बस हम थे, अँधेरे में, मिट्टी की एक क्यारी को देखते हुए।

फ़्लोरा के हाथ मुँह के सामने जुड़े थे। टोन्यो हिल नहीं रहा था, बिल्ले की वजह से। जूलिता, एक बार के लिए, वह भी नहीं। चूरा और मैं एक साथ साँस ले रहे थे।

और तब पहला जल उठा।

क्यारी के बीच एक नन्ही रोशनी थी, हरी और सुनहरी, मोमबत्ती की लौ जितनी, और वह मिट्टी से निकल रही थी। वह बढ़ी। एक पतले तने पर चढ़ी, जैसे स्ट्रॉ पर जूस चढ़ता है, और ऊपर एक गोल, बंद फूल खुला, पतले काग़ज़ का, अंदर रोशनी लिए। फिर दूसरा जला। फिर मैं उन्हें क्रम से गिन नहीं पाया, क्योंकि जो बचे थे वे लगभग एक साथ जल उठे, जैसे रात होने पर किसी सड़क की स्ट्रीट लाइटें।

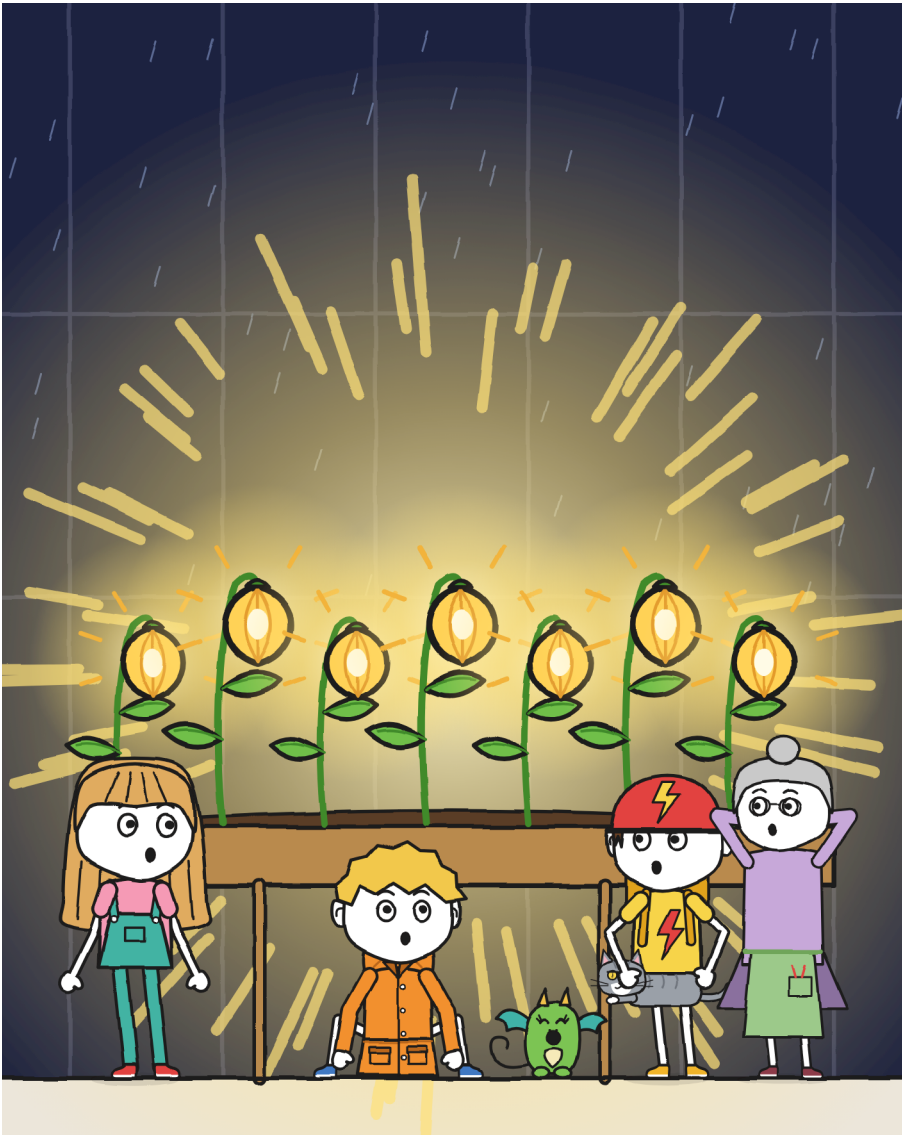

सात कंदील। हर एक में बिजली का एक टुकड़ा।

वह बिजली की रोशनी नहीं थी। बिजली पूरे ग्रीनहाउस को एक पल के लिए सफ़ेद कर देती है और तुम्हें पहले से बुरी हालत में छोड़ जाती है। यह पीली थी, थोड़ी हरी, और टिकी रहती थी: एक रुकी हुई बिजली, जिसने इंतज़ार करना सीख लिया था। उतनी ही रोशनी देती थी जितनी ज़रूरी थी: मिट्टी, तने, चेहरे। सिर पर हाथ रखे फ़्लोरा। खुला मुँह लिए जूलिता, जिसके पास कहने को कुछ नहीं था। गोद में गरज को लिए टोन्यो, जिसे पता नहीं था कि बिल्ला वहाँ तक कैसे पहुँचा। और क्यारी के नीचे से अभी-अभी निकले चूरा और मैं। चूरा मुँह खोले देख रही थी, मेरी ही तरह। अब वह मेरे डर की नक़ल नहीं उतार रही थी। वह इसकी नक़ल उतार रही थी।

बहुत दूर, फिर गरज हुई। जूलिता ने आदत से धीमे गिना, और गिनती रास्ते में खो गई।

फ़्लोरा बहुत देर कुछ नहीं बोलीं। फिर उन्होंने एक फूल को उँगली की नोक से छुआ, धीरे से, जैसे कोई उस चीज़ को छूता है जो बहुत समय से उसका इंतज़ार कर रही थी।

“ऐसी थी सैरगाह,” उन्होंने कहा।

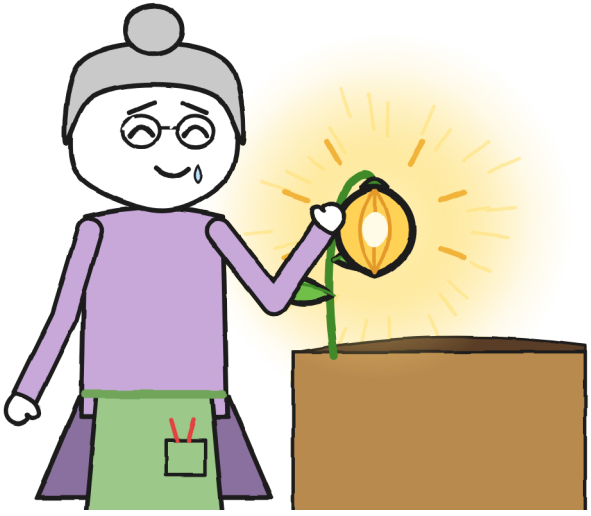

यह उन्होंने फूल की ओर कहा। फ़्रिज की तस्वीर में ऐसी ही एक रोशनी थी, और एक और, और एक और, पैदल पुल तक।

फ़्लोरा का चश्मा धुँधला पड़ गया। मैं यह नहीं लिखूँगा कि वे रोईं। मैं इसे बनाता हूँ, जो एक ही बात नहीं है: फ़्लोरा रोने वालों में से नहीं हैं, सींचने वालों में से हैं।

मैंने भी एक को छुआ। चूरा ने भी, एक पंजे से, बड़ी सावधानी से। वह गुनगुना था, चूरा के घोंसले के सूरज के पत्थर जैसा, जो दिन की गर्मी सँभाले रखता है। यह कुछ और सँभाले था, और उतने ही अच्छे से। वैसे, फ़्लोरा के फ़र्न साबुत बचे थे।



फ़्लोरा ने हत्था घुमाया। पेंट की हुई बूँदें फिर ऊपर चढ़ने लगीं और क्यारी पर बारिश बंद हो गई। फिर वहीं, कंदीलों के बीच, उन्होंने दस्तख़त करने के लिए पेन निकाला।

वह नीला था। मुझे यह देखने का समय भी नहीं मिला कि वह मिटता है या नहीं, क्योंकि जूलिता का हाथ पहले ही उस पर था।

“अभी नहीं,” जूलिता ने कहा और उनका हाथ रोक लिया। “एक बाक़ी है। आठवाँ। वह मेरी वजह से गया: मैंने शीशी समय से पहले खोल दी थी।”

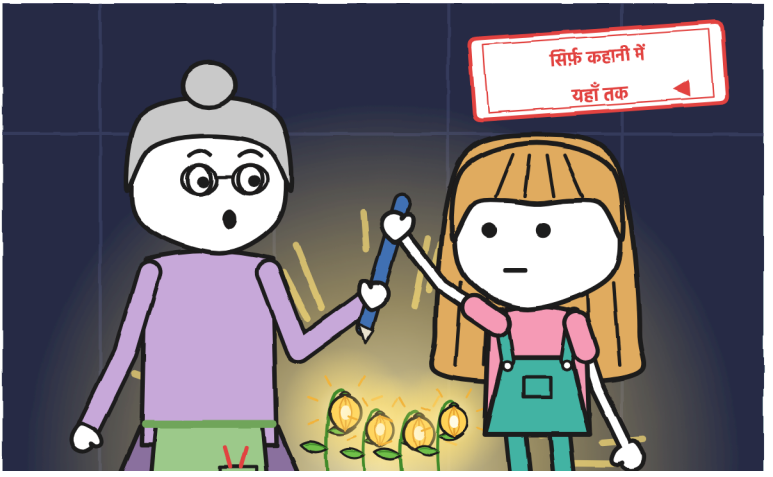

जूलिता सारा दिन इसी दस्तख़त का इंतज़ार करती रही थी। और उसने अभी उसे दो उँगलियों से रोक दिया था।

फ़्लोरा पेन हवा में लिए रुकी रहीं। फिर उन्होंने उसे रख लिया।

“ठीक है,” उन्होंने कहा।

हम एक-एक करके रसोई में लौटे, सातों कंदील काँच के पीछे जलते हुए। रसोई में पहुँचकर फ़्लोरा हमारे सामने खड़ी हो गईं:

“आँगन अभी बंद है। हम अभी बाहर नहीं जा रहे।”

किसी ने बहस नहीं की।

जूलिता ने डिब्बे से लेबल धीरे-धीरे उतारा, ताकि फटे नहीं, और उसे डंगरी की जेब में रख लिया, जैसे कोई चाबी रखता है।

पहुँचाओ तो पूरा पहुँचाओ। –ज.



हम रसोई में तब तक इंतज़ार करते रहे जब तक जूलिता के पास गिनने को बिजलियाँ नहीं बचीं।

बारह हाथी। सोलह। इक्कीस, और एक गरज जो अब गरज नहीं थी, बल्कि दो मंज़िल ऊपर घसीटे जा रहे किसी फ़र्नीचर की आवाज़ थी। फिर आसमान आख़िरी बार बादलों के पीछे जल उठा, और जूलिता तब तक गिनती रही जब तक उसके हाथी ख़त्म नहीं हो गए और कुछ नहीं आया। खिड़की पर बारिश थम गई। तूफ़ान जा चुका था। फिर भी फ़्लोरा ने हमें आख़िरी गरज के आधा घंटा बाद तक अंदर रखा। यह जूलिता का ही नियम था, और इस बार उसे निभाने की बारी उसकी थी, दाँत भींचकर।

फ़्लोरा ने पिछला दरवाज़ा खोला। आँगन गीला और शांत था, पत्थर चमक रहे थे, और बादलों के बीच तारे थे, थोड़े से, उन तारों जैसे जो यह देखने निकलते हैं कि क्या हुआ। जूलिता दहलीज़ पर रुकी रही, और मैं उसके बगल में।

आठवाँ अब भी बाहर था। फ़्लोरा के घर से पैदल पुल नहीं दिखता था: सैरगाह की दीवार उसे ढकती थी। अगर उसे समय पर मिट्टी नहीं मिली, तो वह अब तक एक और पत्थर होगा। मैंने बारिश के नहर की ओर बहने के बारे में सोचा और पानी की तरफ़ देखना बंद कर दिया।

और हमेशा वाली समय-सीमा बाक़ी थी: फ़्लोरा के दस्तख़त के बिना, सुबह होते ही नं. 2 उड़कर अपनी शेल्फ़ पर लौट जाएगा। हमारे पास सूरज निकलने तक का समय था।

“चलो उसे ढूँढें,” जूलिता ने कहा।

जूलिता का हाथ फिर हैंडल पर था। अब दरवाज़ा खुला था।



फ़्लोरा ने कुछ देर रात को देखा। फिर उन्होंने आँगन की दीवार पर, ड्रैगनों के घर की दीवार पर, तीन बार थपथपाया, जैसा वेरा ने कहा था। ठक, ठक, ठक। उँगलियों के जोड़ों से, बिना जल्दी के।

दीवार के ऊपर, उस पार, एक लालटेन की रोशनी जल उठी।

“इस बार,” उन्होंने कहा, “तुम लोग अकेले नहीं जा रहे।”



अध्याय 6

आठवाँ बीज

हम दो बड़ों, एक लालटेन और एक साइकिल के साथ निकले। उससे पहले फ़्लोरा ने मेरे घर और जूलिता के घर फ़ोन किया: "मैं इन्हें आज रात लौटा दूँगी, और ये अकेले नहीं जा रहे।"

यह मेरी ज़िंदगी की पहली ऐसी निकासी थी जो सूची के साथ हुई:

- वेरा, अपनी लालटेन के साथ।
- फ़्लोरा, टॉर्च के साथ।
- टोन्यो, साइकिल के साथ, उसे धकेलते हुए ताकि डायनमो रोशनी दे।
- जूलिता, ख़ाली शीशी के साथ और डंगरी की जेब में लेबल के साथ।
- और मैं, चूरा के साथ रेनकोट के अंदर, उसका सिर बाहर।

वेरा सड़क से आईं, थपथपाने के एक मिनट बाद, गीले लाल बालों और ऊँची उठी लालटेन के साथ। वे हमारे सामने आ खड़ी हुईं, बिना यह पूछे कि किसने क्या खोया है।

चूरा और मैं अब काँप नहीं रहे थे।



हमने आँगन में ढूँढा, पगडंडी पर, नहर के किनारे।

फ़्लोरा ने टॉर्च से पत्थरों की जाँच की। टोन्यो ने साइकिल धकेलते हुए पूरा किनारा नापा। जूलिता ने सैरगाह के पत्थर छूकर देखे कि कोई गुनगुना तो नहीं। चूरा और मैंने हर झाड़ी के नीचे देखा। कुछ नहीं।

रात में सोया हुआ बीज बस एक और पत्थर होता है। और एक सैरगाह में बेशुमार पत्थर होते हैं: यह मैंने उस रात जाना, जूलिता के बगल में घुटनों के बल। सब सोए हुए बीज जैसे लगते थे। कोई नहीं था।

टोन्यो ने वैसे ही ढूँढा जैसे वह डिलीवरी करता है: पूरी सैरगाह दस मिनट में, जाना और आना, और फिर दोबारा।

लालटेन की रोशनी गीले पत्थरों पर चमक रही थी। तभी मैंने सोचा: नया-नया उगा कंदील बहुत धीमा चमकेगा। हम एक नन्ही-सी बत्ती ढूँढ रहे थे और हमारी तीनों बत्तियाँ जल रही थीं: वे उसे निगल जाती थीं।

"सब बुझा दो!" मैंने कहा।

किसी ने नहीं पूछा क्यों। टोन्यो ने झटके से ब्रेक लगाया, और साइकिल की रोशनी बुझ गई ("बिजली" कभी नहीं रुकती)। वेरा ने लालटेन की लौ तब तक धीमी की जब तक वह कुछ नहीं बची। फ़्लोरा ने टॉर्च बुझा दी। एक पल को पूरी सैरगाह में कोई रोशनी नहीं थी।

और अँधेरे में, सैरगाह के छोर पर, एक नन्ही रोशनी दिखाई दी।

वह पैदल पुल के सिरे पर थी।

जूलिता उसकी ओर चल पड़ी। बाक़ी हम पीछे चले।

बारिश उसे पगडंडी से बहाकर सैरगाह तक ले आई थी, और वह दो पत्थरों के बीच की एक दरार में अटक गई थी, उन दरारों में से जिनमें हमेशा उँगली भर मिट्टी और कोई ऐसी घास होती है जिसे किसी ने नहीं लगाया। वहाँ वह अपने आप लग गई थी। दूर से, एक नन्ही रोशनी। पास से, सब कुछ रोशन करती हुई।



उसका तना टेढ़ा था और रोशनी वैसी ही थी जैसी ग्रीनहाउस के सातों की। वह पैदल पुल की शुरुआत और पानी का एक टुकड़ा रोशन कर रही थी।

जूलिता ने पैदल पुल को देखा। रोशनी में वह कुछ और ही लग रहा था: छोटा, चौड़ा, पानी से ज़्यादा लकड़ी जैसा। इस बार दिख रहा था कि वह कहाँ ख़त्म होता है।

उसने तख़्ते पर एक पैर रखा। सिर्फ़ एक। फिर हटा लिया। वह क़दम नहीं था, परख थी, पर पैर एक पल जमा रहा, आठवें की रोशनी के ऊपर, और किसी ने कुछ नहीं कहा। मैंने "क़दम" नहीं कहा: इस बार उसे रास्ता दिख रहा था।

दूर से अब डर नहीं लगता। पास से भी लगभग नहीं। –ज.

"यह यहीं रहेगा," फ़्लोरा ने कहा। "इसने जगह चुन ली है।"

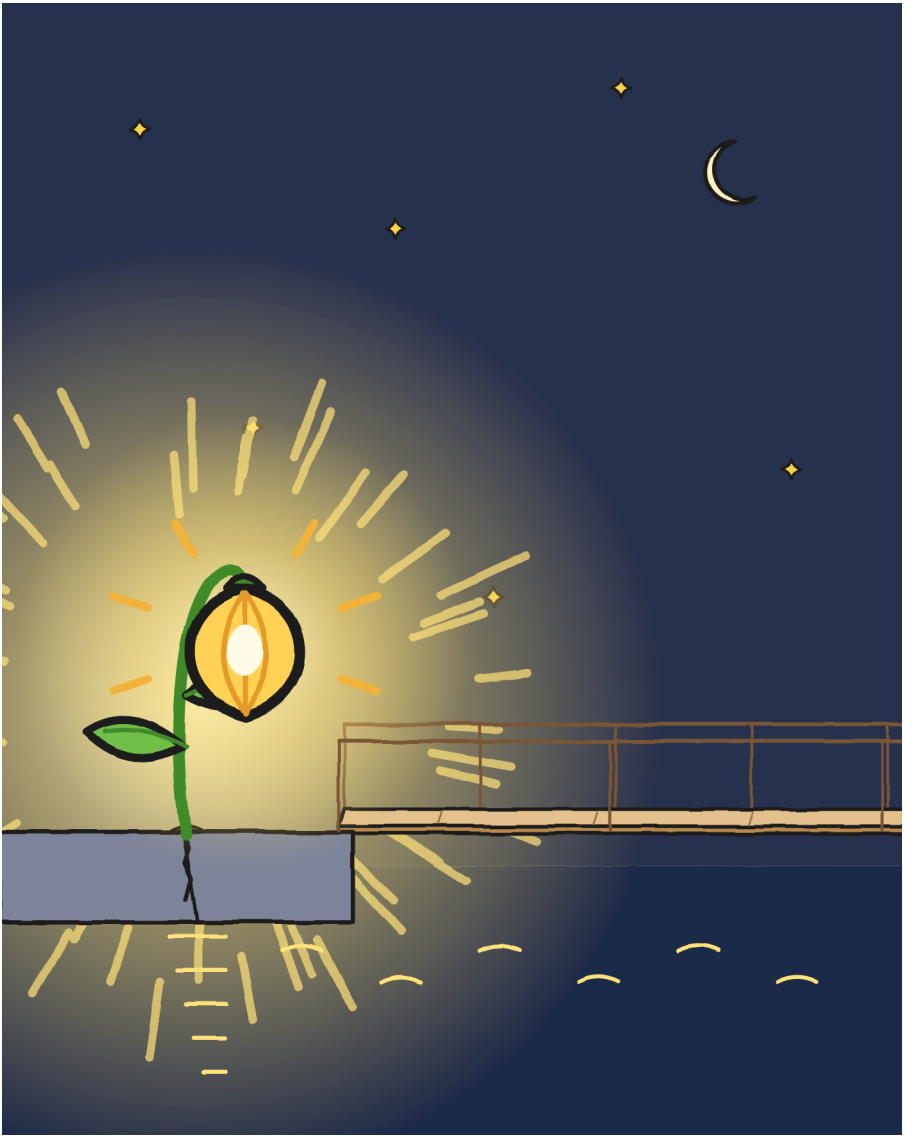

जूलिता ने लेबल निकाला और अपना हरा मार्कर। फ़्लोरा ने उसे पैदल पुल के किनारे पर टिकाया और आठवें की रोशनी में दस्तख़त कर दिए।

“वापस आया” की तेईस मुहरों के ऊपर हरे रंग में लिखा गया: पहुँच गया · फ़्लोरा।

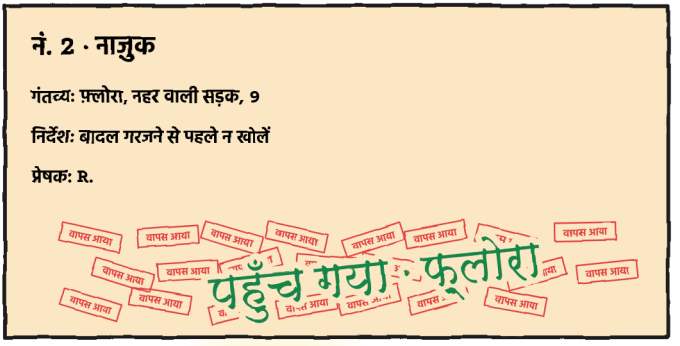

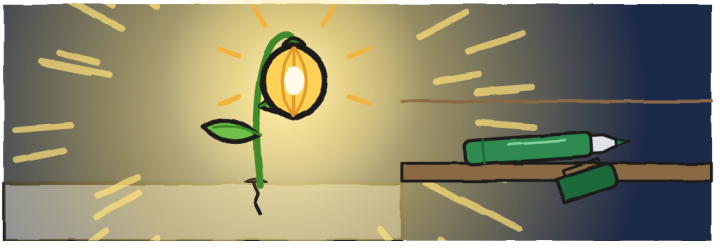

विदा लेते समय, अपने दरवाज़े पर, फ़्लोरा ने मुझे अपनी छलनी दे दी।

“रख लो। अगले तूफ़ान के लिए।”

फिर उन्होंने जोड़ा:

“मारा से कहना कि अब तो वक़्त हो चला था।”

उन्होंने उसे हत्थों से पकड़कर मुझे थमाया, जैसे असली हेलमेट हो। उन्होंने “अगर और तूफ़ान आया तो” नहीं कहा: उन्होंने कहा “अगला”, जैसे अगले शनिवार कहते हैं। अब वह मेरे कमरे की खिड़की के हैंडल से लटकी है, डिब्बों के ऊपर, जो अब भी बंद हैं। उस कमरे में यह पहली चीज़ है जो किसी डिब्बे में नहीं आई थी।

संदेश के बारे में मैं कुछ नहीं पूछ सका: फ़्लोरा ने मेरे कुछ सोचने से पहले ही दरवाज़ा बंद कर दिया। R. की सूची ऐसी रह गई:

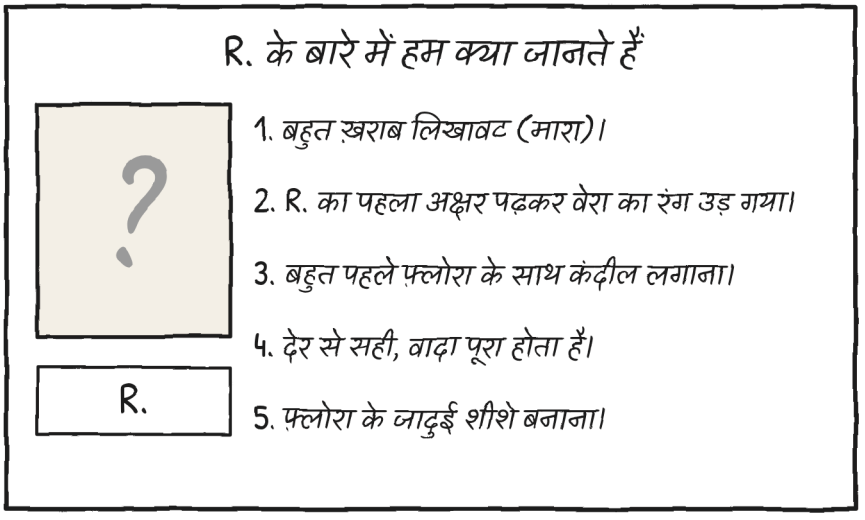

6. कोई उसका नाम नहीं लेता। यह भी एक सुराग है। –ज.

वेरा ने चूरा को उसके घोंसले में छोड़ा, पहुँचने से पहले ही सोई हुई, मेरे धारीदार स्वेटर के ऊपर, जो दो शनिवार से वहीं पड़ा है और अब मुझसे ज़्यादा उसकी महक देता है। "उसका पहला तूफ़ान," उन्होंने कहा और उसे ठोड़ी तक ढक दिया। वह थोड़ा मुँह खोले सो रही थी, मेरी तरह, मम्मी के अनुसार। उसे तूफ़ान याद नहीं रहेगा। इसीलिए उसके पास यह डायरी है।

फिर वे हमें अपनी वैन में दुकान तक ले गईं, टोन्यो की साइकिल पीछे लिटाकर, हाईवे वाले पुल से: बड़ा पुल पहले से उठा हुआ था। जूलिता नहर वाली खिड़की के पास बैठी और पूरे पुल पर पानी को सीधे देखती रही: वह कुछ ढूँढ रही थी। और वह दिख गया।

बिल्कुल दूर, पैदल पुल के सिरे पर, बहुत छोटी, एक रोशनी थी। एक। उस नहर में जिसमें बरसों से कोई नहीं थी।

दुकान में अँधेरा था। सिर्फ़ बिजली नहीं: पूरी तरह अँधेरा, बोर्ड तक; जो थोड़ा दिख रहा था वह सड़क की स्ट्रीट लाइट से था। वेरा ने हमें दरवाज़े पर छोड़ा और अपने ड्रैगनों के पास लौट गईं, जो, उन्होंने कहा, तूफ़ान के बाद देर से सोते हैं। मारा काउंटर पर नहीं थीं।

वे नीचे थीं।

हम तीनों काउंटर के ऊपर से झाँके, जूलिता, टोन्यो और मैं, क़तार में, ठोड़ियाँ लकड़ी पर टिकाए, और नीचे, ख़ाली जगह में, मारा थीं: गले तक कंबल में लिपटी, ईयरमफ़ पहने और सिर पर पतीला, और पतीले के ऊपर टोपी, क्योंकि मारा इसके लिए भी टोपी नहीं उतारतीं। वे रबर का मेंढक गले लगाए थीं। मेरा मेंढक। जो किसी का नहीं था। अब मुझे पता चला कि मारा को वह किसलिए चाहिए था।

“क्या अब बीत गया?” उन्होंने पूछा।

मैं वह आवाज़ जानता था। बिस्तर के नीचे से बोलते समय वह मेरी अपनी आवाज़ थी।

“काफ़ी देर पहले,” जूलिता ने कहा।

मारा वहीं रहीं: कंबल, ईयरमफ़ और पतीला।

वे पार्सल को तेईस बार लेकर गई थीं। एक बार भी तूफ़ान में नहीं।

उस सुबह उन्होंने सब कुछ काउंटर के आख़िरी सिरे पर तैयार रख लिया था: कंबल, ईयरमफ़, पतीला। मैंने उसे देखा था, और फिर पार्सल को देखता रह गया था।

“मुझे यहाँ कुछ काम हैं।” हाँ, हाँ। —ज.

मैंने उन्हें फ़्लोरा का संदेश दिया।

मारा ने नहीं पूछा कि कौन-सी फ़्लोरा, कैसा वक़्त, किस बात का वक़्त। उन्होंने पतीला भौंहों तक नीचे खींच लिया, जो पतीला पहने हुए शर्म से लाल होने के सबसे क़रीब की

चीज़ है, और उसके नीचे मुझे एक मुस्कान दिखी, उनमें से जो अब वे इस्तेमाल नहीं करतीं, दो जवान जादूगरनियों की पुरानी तस्वीर वाली, स्टिकर वाली, जो काउंटर के पीछे टँगी है। मारा और फ़्लोरा एक-दूसरे को जानती हैं, और सिर्फ़ तेईस डिलीवरियों से नहीं। कैसे, मुझे नहीं पता; वह किसी और शनिवार के सवालों की सूची में जाएगा, जो अब दूसरे पन्ने तक पहुँच चुकी है।

"मुझे भी गरज से डर लगता है," मैंने उनसे कहा।

पहली बार, क्यारी के नीचे, इसके लिए पूरा तूफ़ान लगा था। दूसरी बार यह अपने आप निकल गया, हिच की तरह।

मारा ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने कंबल उठा दिया।

मैंने छलनी पहन ली, जिसे मैंने फ़्लोरा के दरवाज़े से छोड़ा ही नहीं था। इसी के लिए उसे दिया गया था। और मैं उनके साथ काउंटर के नीचे घुस गया।

हम दोनों के लिए जगह थी।

मारा के पास पतीला था; मेरे पास छलनी। वे अब भी मेंढक को गले लगाए थीं। काउंटर के ऊपर जूलिता और टोन्यो झाँक रहे थे। कोई नहीं हँस रहा था।

हम ऐसे ही रहे जब तक मारा का डर नहीं गुज़र गया, या जब तक मेरा पैर नहीं सो गया, जो एक ही बात है। जब वे बाहर निकलीं, उन्होंने बत्ती जलाई, और जूलिता ने लेबल काउंटर पर मुहर के बगल में रख दिया: "वापस आया" की तेईस मुहरें और उनके ऊपर पहुँच गया · फ़्लोरा। मारा ने उसे बिना छुए बहुत देर तक पढ़ा, जैसे नं. 1 का लेबल पढ़ा था। फिर उन्होंने काउंटर के आख़िरी सिरे को देखा, जहाँ अब कंबल नहीं था, और एक डिब्बा लेने गईं।

उन्होंने टोन्यो के लिए डिलीवरी का एक डिब्बा उलटा करके स्टूलों के पास रख दिया।



“फ़िलहाल,” उन्होंने कहा।

मारा के मुँह से “फ़िलहाल” काफ़ी लंबा भी चल सकता था।

टोन्यो बैठ गया। डिब्बा इतना नीचा था कि उसके घुटने लगभग उसकी ठोड़ी को छू रहे थे। वह बैठा रहा।

जूलिता ने उसे हरा मार्कर थमा दिया।

बैग पर, “तूफ़ान को छोड़कर” के बाद, टोन्यो ने दो शब्द जोड़ दिए:

“और बिल्लियों को”।

अब छोटे अक्षर सच बोल रहे हैं। –ज.

फिर जूलिता मेरे नीले स्टूल पर चढ़ी, जो दीवार के सबसे पास वाला है, उसने बोर्ड पर 19 काटा और उसके बगल में 18 लिख दिया, और बड़ा, उसे भी काटने की इच्छा के साथ।

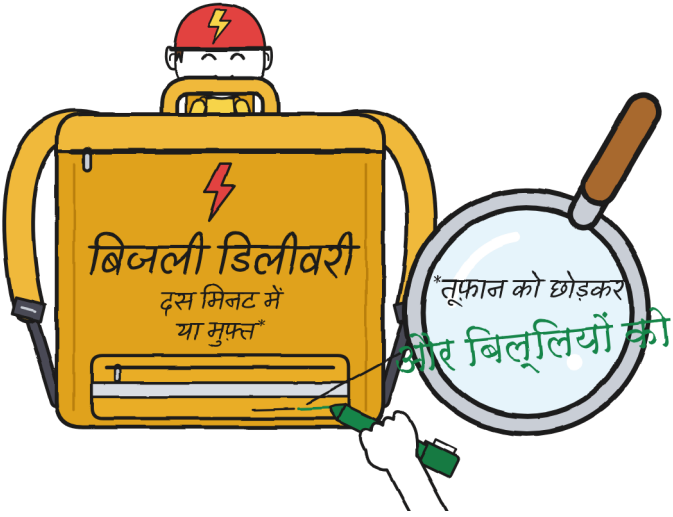

मैंने अपना प्लान ठीक कर लिया है। गरज के लिए:

1. हाथी गिनना।
2. किसी के साथ।
3. हिच आ जाए, तो कुछ नहीं होता।

और यह मत कहना कि तुम किसी चीज़ के शिकारी हो। –ज.

हम दुकान बंद कर रहे थे कि एक घंटी बजी।



टिन-टिन।

वह दरवाज़े से नहीं आई थी। वह वापस आए पार्सलों की शेल्फ़ से आई थी: नं. 3, दो ख़ाली जगहों के बगल में।

मैं लेबल पढ़ने गया।

नं. 3 · टोन्यू के लिए।

टोन्यो अपने हेलमेट के रंग जैसा लाल हो गया।



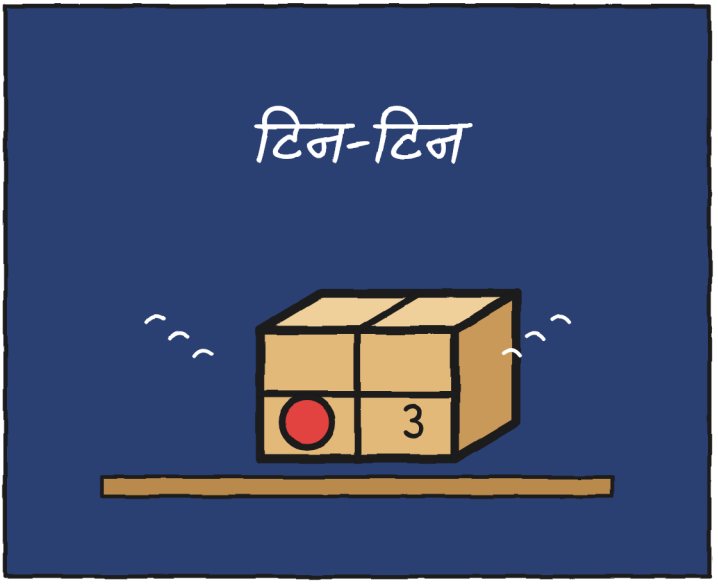

टोन्यो को पार्सल कौन भेज रहा है? –ज.

नामुमकिन डिलीवरी · 3

(बहुत जल्द)

एक कहानी, छह साइज़

यह किताब छह साइज़ में, 3 से 16 साल तक के लिए, और 20 से ज़्यादा भाषाओं में मिलती है। XXS, XS, S, M और L कहानी को पन्ना-दर-पन्ना, उन्हीं चित्रों के साथ सुनाती हैं, हर बार थोड़े और ब्योरों के साथ; XL उपन्यास है: वही कहानी, बस उसमें वह सब कहने की जगह है जो गुनी सोचता तो है, पर कहता नहीं।

CEFR के स्तर केवल मार्गदर्शन के लिए हैं। XXS: pre-A1 · XS: A1 · S: A2 · M: B1 · L: B2 · XL: B2–C1।

हर कोई अपने साइज़ में। तूफ़ान वही। —ज.

परिवारों और शिक्षकों के लिए

हर अध्याय का अभ्यास linguaula.com *पर करो (L साइज़ की गतिविधियों के साथ)*

असली तूफ़ान: क्या करना चाहिए

1. अगर तुम्हें गरज सुनाई दे, चाहे दूर ही क्यों न हो, तो घर के अंदर आ जाओ: बिजली तुम तक पहुँच सकती है।
2. अंदर रहो, किसी बड़े के साथ, खिड़कियों, दरवाज़ों और काँच से दूर। ग्रीनहाउस, पुल, पेड़ या पानी के पास बिल्कुल नहीं।
3. आख़िरी गरज के आधा घंटा बाद तक बाहर मत निकलो।
4. हाथी गिनने से पता चलता है कि बिजली पास गिरी या दूर, और मन शांत होता है। इससे यह पता नहीं चलता कि बाहर कब निकलना है।

अपना तूफ़ान गिनो

घर के अंदर से: बिजली की चमक और गरज के बीच हाथी गिनो।

चमक	*हाथी*	*किलोमीटर* (*लगभग हर 3 हाथी पर 1*)	*वह बिजली: क्या और पास या और दूर?*
1	15	5	—
2	9	3	*और पास*

गरज पर तुम्हें हिचकी आती है? हाथी गिनो। और किसी के साथ गिनो।

–ज.